॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जुलाई, 2014 वर्ष 17, अंक 7
विक्रमी सम्वत् 2071
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 24

परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता

❒ डॉ. सूर्यदेव शास्त्री

''सहज पके सो मीठा होऽय....' एक दाक्षिणात्य विद्वान हुए-नाम है-''तिरूवल्ललुवर'' उन्होंने ''तिरूक्कुरल'' नामक ग्रन्थ लिखा, जिसे दक्षिण भारत के एक भाग में धर्मग्रन्थ का स्थान प्राप्त है। इन्होंने इस ग्रन्थ में एक स्थान पर लिखा है-

गच्छन् पिपीलिका याति योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति॥

अर्थात् चलती हुई चीटी सैकड़ों किलोमीटर की यात्रा कर लेती है और सर्वाधिक लम्बी यात्रा करने में समर्थ गरूड़ नामक पक्षी बिना चले एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता।

एक बार की बात है मैंने इस श्लोक को कक्षा में पढ़ाया बच्चों ने ध्यान से सुना-कथा पूर्ण हुई। दूसरे दिन जैसे ही कक्षा में प्रवेश किया तो एक विद्यार्थी ने खड़े होकर पूछा..... सर! मेरी एक समस्या है? मुझे एक बात समझ में नहीं आ रही है? आपने पिछले दिन जो पाठ पढ़ाया था मैं उस पाठ को घर में दोहरा रही थी कि मेरी माँ ने मुझे समझाया कि इस बात को इस तरह से समझो।

एक बार एक खरगोश और एक कछुए में दौड़ हुई। खरगोश स्वभाव से तेज दौड़ने वाला है और कछुआ धीमे चलने वाला जलचर है, निर्धारित समय पर दौड़ शुरु हुई कुछ दूर तक खरगोश तेजी से दौड़ा और पीछे मुड़कर देखने लगा कि कछुआ तो बड़ी धीमी गति से आ रहा है वह मेरे साथ इस प्रतियोगिता में कैसे जीतेगा? कहाँ मैं तेज दौड़ने वाला और कहाँ यह कछुआ धीमे चलने वाला। खरगोश ने सोचा-चलो, मैं कुछ देर तक आराम कर लेता हूँ खरगोश ने आराम किया तो नींद आ गई कुछ समय बाद आँख खुली तब भी कछुआ पीछे था मन हुआ कि चलो एक नींद और ले लेता हूँ, खरगोश फिर सो गया। कुछआ धीरे-धीरे चलता रहा, परिणाम यह हुआ कि कछुआ निरन्तर चलते रहने से आगे निकल गया और दौड़ जीत गया।

विद्यार्थी ने पूछा-सर! मुझे आप यह बतलाइये कि क्या खरगोश और कुछए में यह दौड़ हुई थी? और अगर हुई थी तो कब और कहाँ हुई थी? मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा है क्योंकि खरगोश जंगल में रहता है और कछुआ पानी में-यह कैसे हुआ मुझे यह बतलाइये?

मैंने उत्तर दिया-बेटा! यह तो केवल कहानी है-यह दौड़ कभी नहीं हुई यह तो केवल हमें समझाने के लिए कही जाती है। इसका अर्थ केवल इतना है कि विद्यार्थी यदि पढ़ने में कमजोर ही क्यों न हो तब भी उसे यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि उसे सफलताएं प्राप्त नहीं हो सकती। यदि विद्यार्थी पढ़ने में कुशल है तो भी उसे इस गलतफहमी में कभी नहीं रहना चाहिए कि बिना मेहनत ही उसे सब कुछ मिलने वाला है। भाव यह है कि बिना परिश्रम के किसी को कुछ नहीं मिलता। बल्कि परिश्रम न करने वाला अपना पाया हुआ भी खो बैठता है, जबकि परिश्रम करने वाला व्यक्ति नित्य प्रति उन्नति की राह पर आगे बढ़ता रहता है।

यह कहानी विशेषकर विद्यार्थियों को ध्यान में रखकर सुनाई जाती है-क्योंकि विद्यार्थियों को यदि तीन श्रेणियों में विभक्त कर दिया जाए तो-पहली पंक्ति से खड़े होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 16 प्रतिशत होती है ये कक्षा में अग्रणी रहते हैं। इसी अन्तिम पंक्ति में खड़े होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 17 प्रतिशत होती है, और मध्य की पंक्ति में खड़े होने वाले विद्यार्थियों की संख्या 67 प्रतिशत होती है-यह आँकड़ा एक सर्वे के आधार पर नियत किया गया है। कक्षा में 67 प्रतिशत विद्यार्थी मध्यम होते हैं। किसी प्रकार की रूकावट पैदा नहीं करते, न ज्यादा प्रश्न करते, न तर्क और न वितर्क, वे तो जो पढ़ाया जाता है उसमें सन्तुष्ट रहने वाले हैं, किन्तु पहली पंक्ति में बैठने वाले 16 प्रतिशत विद्यार्थी कुशल होते हैं, समझदार होते हैं, वे हमेशा आगे बने रहने की होड़ में रहते हैं इनका विद्यार्थी जीवन प्रायः प्रतिस्पध ा में रहता है, वे किसी भी प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए उत्सुक रहते हैं। तीसरे स्थान पर रहने वाले विद्यार्थी 17 प्रतिशत हैं। इन्हें हम कमजोर विद्यार्थी समझते हैं ये विद्यार्थी स्वयं तो कुछ भी नहीं पूछते क्योंकि इनकी समझ में पहली बार पढ़ाने से नहीं आता और एक से अधिक बार पढ़ाने में आध्यापक आनाकानी करते हैं, परिणाम स्वरूप ये विद्यार्थी प्रायः कमज़ोर बने रहते हैं।

अध्यापन के दौरान मैंने कई बार ऐसे परीक्षण किये हैं कि कमजोर बच्चों को उत्साहित करके, पढ़ने की प्रेरणा करके यदि उन्हें समझाया जाए तो वे भी आगे निकल आते हैं। हिन्दी भाषा की एक कहावत है-**''डूबते को तिनके का सहारा''** इसी प्रकार अनुत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी को यदि थोड़ी सी सहायता मिल **(शेष पृष्ठ 21 पर)**

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आर्य पुत्र श्री पूनम सूरी जी प्रादेशिक सभा के पुन: प्रधान निर्वाचित

प्रधान निर्वाचित होने के उपरांत श्री पूनम सूरी जी के साथ चित्र में श्री प्रबोध महाजन (उपप्रधान), श्री एस.के. शर्मा (महामन्त्री), श्री ओमचेरी जी (उपप्रधान) एवम् श्री कीमती लाल जी (पुस्तकालयाध्यक्ष)

डॉ. एस.के. सामा का 80वां जन्मदिवस आयोजित

आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग के भव्य सभागार में डी.ए.वी. के वरिष्ठ उपप्रधान डॉ. एस. के. सामा का 80वां जन्मोत्सव आयोजित किया गया। आर्य समाज अनारकली के साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर सामा परिवार की ओर से इसे आयोजित किया गया था जिसमें भजन एवम् आचार्य श्री वागीश जी (एटा) का सारगर्भित विशेष प्रवचन का भी आयोजन किया गया एवम् परिवार की ओर प्रीति भोज भी आयोजित था। इसी अवसर पर टंकारा ट्रस्ट की ओर से ट्रस्ट मन्त्री श्री रामनाथ जी सहगल एवम् टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री पूनम सूरी, प्रधान डी.ए.वी. एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा ओ३म् का स्मृति चिन्ह एवम् पीत वस्त्र द्वारा अभिनन्दन एवम् सम्मानित किया गया।

आनन्द का स्त्रोत मौन

ब्राह्म मुहूर्त का समय, शांत वातावरण, प्रकृति का वह मौन कितनी मौलिकता लिए हुए प्रतीत होता है। एकाग्रचित होने पर एक चिंतन चलने लगता है। हाँ! यह मौन ही तो शाश्वत सत्य है। यह मौन तो जन्म से ही जुड़ा है, जीवन आरम्भ से ही इसका प्रारम्भ हो जाता है। जब बालक इस धरा पर जन्म लेता है तब सबसे पहले मात्र देखता है, बोलता नहीं। मौन जन्म से प्राप्त अवस्था है, मृत्यु के उपरान्त देह भी मौन हो जाती है और जन्म मरण के इस चक्र से मुक्ति प्राप्त कर चुके सिद्ध भी तो मौन ही हैं। अर्थात् मौन हमारी अपनी अवस्था है। पैदा हुए बच्चे का मौन निर्दोष मौन है। मात्र कुछ क्षण के लिए ही सही एक बार बच्चों की तरह मौन हो जाएँ और मौन होकर मात्र देखना प्रारम्भ करें, फिर अनुभव करें कि क्या होता है?

सामान्यतया हम यही जानते और समझते हैं कि मौन का तात्पर्य है न बोलना, परस्पर वार्ता का निषेध। परन्तु वस्तुस्थिति इससे भिन्न है। मौन धारण करने से बाह्य जगत् से चर्चा रूक जाती है, पर अन्तःकरण में आत्मा और परमात्मा की वार्ता चालू हो जाती है। कहा भी जाता है कि मौन प्रार्थनाएं परमात्मा तक शीघ्र पहुँचती हैं, क्योंकि वे शब्दों के भार से मुक्त होती हैं। मौन तो वह बिन्दु है जहाँ से संसार का नहीं, अपितु सच्चे आत्मस्वरूप का दर्शन होता है। मौन एक अहसास है, जिसे शब्दों में समाहित करना संभव नहीं।

वाक् शक्ति से मनः शक्ति विशेष प्रबल होती है। इसलिए मानसिक स्मरण में अधिक तीव्र शक्ति होती है। यदि भक्ति की बात करें तो भक्ति भी भाषा में नहीं, मन से श्रद्धा में जीवित होती है। इतना अवश्य है कि विचार शक्ति के साथ जो अनुपम शक्ति होती है वह है बोलने की शक्ति-भाषाशक्ति। लेकिन इस शक्ति का भी सदुपयोग करना हमारे ही हाथ की बात है, क्योंकि बोलना अगर चाँदी है तो मौन रहना सोना है।

मौन का वास्तविक अर्थ है-मन का मौन। मात्र वचन से मौन होने के कारण व्यक्ति लिख-लिखकर उत्तर देते रहते हैं। लिखकर उत्तर देने में सारी इन्द्रियाँ काम करती हैं, लिखने में तनाव भी रहता है, चिड़चिड़ापन एवं जल्दी भी रहती है। सामने वाला पूरी बात समझ भी नहीं पाता, फिर क्रोध आने लगता है कि यह समझता क्यों नहीं? हाथ, होंठ, आंखों और शरीर को तरह-तरह से नचाकर समझाते हैं। क्या यह मौन है? क्या इससे शांति की प्राप्ति होती है? ध्यान की साधना भलीभांति हो पाती है? जहां न तर्क, न विवाद न आक्षेप, न खंडन है वह सच्चा मौन है। आँखों से इशारा किए जा रहे हैं, दोनों हाथों को नचा रहे हैं, ऊँ-ऊँ, हूँ-हूँ किए जा रहे हैं, यह मौन नहीं है। मौन में शरीर भी शांत, इन्द्रियाँ भी शांत, बुद्धि भी शांत, प्राण भी शांत, आनन्द में बैठे हैं, मस्ती में मग्न हैं, चारों ओर शांति व तृप्ति फैल रही है। किसी दूसरे लोक की यात्रा हो रही है। मौन में मात्र बाहर से अलग होना ही नहीं, अंदर से जुड़ना भी आवश्यक है।

मौन शब्द के दो अर्थ प्रतिभासित हुए-एक तो पूर्ण मौन, एक अल्प भाषण। व्यर्थ मत बोलो, निरर्थक मत बोलो। बोलने में तीन बातों का उपयोग हो- 1. सोचकर बोलो, 2. समझकर बोलो, 3. विचारपूर्वक बोलो। चुपचाप हो जाना ही मौन नहीं है, उपयुक्त अवसर पर मौन होना और बोलना दोनों में समयज्ञता चाहिए। ''समय पर सहना, मौके पर कहना'' आना चाहिए। मानव की भाषा शक्ति है। उसका उपयोग उसे विवेकपूर्वक करना चाहिए। अधिक, अनर्गल, अपशब्द, अनर्थकारी नहीं बोलना चाहिए। वर्तमान युग में गोली से जितने युद्ध नहीं होते बोली से उतने होते हैं। वर्षो पहले हुए युद्धों के मूल में भी बोली ही रही है। इसलिए कम बोलें, काम का बोलें। कहते हैं- ''ज्ञानी ज्यादा नहीं बोलता, अज्ञानी कम नहीं बोलता।'' मौन, वचन-गुप्ति, भाषा-समिति आदि एक ही हैं। एक विचारक ने कहा-''जहाँ शब्दरूपी पत्ते अधिक होते हैं वहाँ ज्ञान रूपी फल दिखाई नहीं देता है।''

> मौन प्रेरणा है जीवन पथ पर प्रगति का
> मौन अहसास है आत्मशांति की अनुभूति का
> मौन आमंत्रण है, पर से स्व में प्रवृत्ति का
> मौन अनुभव है संसार से निवृत्ति का
> मौन समाधान है कलह से विरक्ति का
> मौन साधना है परमात्मा से अनुरक्ति की
> मौन मार्ग है जीव की सुगति का

मौन एक भाषा भी है, जैसे आंसू भी एक भाषा है। वह पीड़ा व्यक्त करती है तो प्रेम के उत्कृष्ट आरोहण में भी वही होती है। ''मुँह का मौन होना मौन नहीं, सच्चा मौन तो मन का मौन होना है।'' ''तन का संयम रोग से और वाणी का संयम कलह से बचाता है।'' ''जिनका जीवन बोलता है उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।''

आत्मा को परमात्मा के निकट लेकर आने वाला चुम्बक है मौन, बाह्य जगत् के संबंध हटाकर, अन्तर्जगत के कण-कण में आध्यात्मिकता की ऊर्जा पैदा करने वाला है मौन। मौन पर चर्चा करना बेकार है, मौन पर लिखना व्यर्थ है, मौन तो अहसास करने वाला भाव है।

अजय टंकारावाला

महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा
प्रवेश प्रारम्भ

विद्यालय में दो प्रकार के पाठ्यक्रम हैं।

❑ **प्रथम पाठ्यक्रम** महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा से मान्यता प्राप्त है। विद्यालय में प्राच्य व्याकरण पाठ्यक्रम से अध्ययन कराया जाता है। प्रवेश प्राप्त करने के लिए कक्षा सात से उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। आठवी कक्षा में प्रवेश प्राप्त होगा। विद्यालय में पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा, शास्त्री एवं आचार्य पर्यन्त का अभ्यासक्रम है।

❑ **द्वितीय पाठ्यक्रम** में उपदेशक कक्षाएं चलती हैं। जिसमें व्याकरण, वेद, दर्शन, उपनिषदादि के उपरान्त ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थ पढाये जाते हैं। भजन, प्रवचन तथा कर्मकांड विशेष रूप से सिखा कर आर्यसमाज के पुरोहित हेतु प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ से उत्तीर्ण स्नातक आर्यसमाजों अथवा आर्य संस्थाओं में पुरोहित अथवा अन्य सेवा कार्य प्राप्त कर सकते हैं।

दोनों पाठ्यक्रमों में इच्छुक प्रवेशार्थी अपने निकटतम आर्यसमाज से परिचय-पत्र प्राप्त कर लावें तो ज्यादा उचित होगा। दोनों पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्राप्त करने के लिए आचार्य जी से पत्र-व्यवहार द्वारा जानकारी प्राप्त करें।

सम्पर्कः आचार्य रामदेव शास्त्री पो. ता. टंकारा, जि. राजकोट (गुजरात) पिन. 363650

अंगस्पर्श मन्त्र

❒ कु. हर्षिता गाँधी

ओं वाक् वाक् (ओं प्राण: प्राण:! ओं चक्षुश्चक्षु:। ओं श्रोत्रम्। ओं नाभि:। ओं हृदयम्। ओं कंठ:। ओं शिर:। ओं बाहुभ्यां यशोबलम्। ओं करतल करपृष्ठे।।

अंग स्पर्श का अर्थ है जल से अंगों को छूना। इसमें जल से अपनी मानसिक भावना और दृष्टि द्वारा अपने प्रत्येक अंग को प्रभावित/ Hypnotise करना पड़ता है।

इस मन्त्र में दश आवश्यक अंग गिनाये गए हैं, जिनसे व्यवहार किया जाता है। पहला अंग गिना-वाक् वाक्। अब यहाँ यह प्रश्न उठता है कि न सर से आरम्भ किया जाए, जो सबसे ऊपर है, न पैर से जो सबसे नीचे है और न नाभि से जो बीच में है। वाक्-वाक् से ही क्यों आरम्भ किया? यह पहला रहस्य है समझने का! अब मैं तनिक आपसे एक प्रश्न तो कर लूँ। वह यह है कि क्या आपको प्रभु की लीला अद्भुत जान पड़ती है? तनिक सोचिए तो सही! मनुष्य की आँखे ऊपर हैं और कान पहलू में नीचे यह क्यों? अन्य सभी पशुओं के कान हिलते हैं किन्तु मनुष्य के नहीं हिलते।

इन आश्चर्यजनक बातों को हल करने के लिए ही तो हम इस संसार में आए हैं और जब इन बातों के हल निकल गए तो समझो हम मुक्त हो गए, समझदार और बुद्धिमान बन गए, नहीं तो सदैव हैरान, चकित और बेसुध से होकर जन्म-जन्मान्तर में फंसे रहेंगे।

इस भ्रम को दूर करने के लिए आवश्यकता है- ध्यानयोग की। यह सन्ध्या भी तो ध्यानयोग ही है। यदि आप संसार की छोटी-छोटी बातों पर ध्यान दें तो आपको वास्तव में बड़ा आनन्द आएगा।

प्रभु के सभी कार्य बुद्धिपूर्वक हैं-अर्थात् 'अत्यन्त शुद्ध ज्ञान एवं पूर्ण सिद्धिवाले ईश्वर ने वेदमन्त्रों की रचना की है। संसार में कोई भी पदार्थ बेकार नहीं बनाये है, किन्तु नियम यह है कि जो वस्तु बुद्धि से बनाई गई है उसे बुद्धि से जाना भी जाएगा। जब इन इन्द्रियों का नियमपूर्वक संयम किया जाएगा तो संसार के सारे रहस्य स्वयंमेव खुल जाएंगे।

अब सुनिए! वाक् से यह सिलसिला क्यों आरम्भ हुआ और करतल कर पृष्ठे पर क्यों अन्त हुआ? देखिए, यह वाक्, प्राण, चक्षु, श्रोत्र, नाभि, हृदय, कंठ और सिर से चक्कर लगाता हुआ बाहु तथा कर पर समाप्त होता है, परन्तु क्यों?

वाक् और हाथ प्रमुख इन्द्रियाँ हैं। वाक् की पुष्टि हाथ करता है। जिह्वा से बोला जाता है और हाथ से कार्य किया जाता है, तब कहीं वचन और कार्य समान होकर मनुष्य का सफल मनोरथ होता है और सच्चा कहलाता है। यदि जैसा जिह्वा कहे, वैसा काम न किया जाए तो वह झूठा कहलाता है। कभी कभी कोई किसी से कुछ प्रण करता है किन्तु कुछ समय बाद जब उसे बताया जाए तो वह कहता है कि-मैंने तो प्रण किया ही नहीं, न ही कहा है। मुझे तो याद ही नहीं पड़ता। किन्तु जब उसे उसके हाथ का लिखा हुआ दिखा दिया जाए तो उसे अपना प्रण ठीक-ठीक स्मरण आ जाता है। यदि किसी को जिह्वा से कहो चुप रहो और वह चुप न होवे तो उसके मुंह पर हाथ रखकर उसे चुप कराया जा सकता है। यदि किसी से कहा इधर, आओ और वह न आवे तो उसे हाथ से पकड़कर आज्ञा का पालन कराया जा सकता है। मनुष्य जब तक सारे शुद्ध और पुण्य कार्य करता रहे, किन्तु सत्यवादी न हो, वह तब तक परमात्मा और आत्मा का साक्षात नहीं कर सकता। सच्चाई ही सबसे बड़ी भलाई है। संसार में भले तो बहुत हैं किन्तु सत्यवादी कम हैं। इसलिए वाक् को प्रमुख इन्द्रिय मानकर इससे मन्त्र का आरम्भ किया गया है और संसार में जितने भी व्यवहार चलते हैं, उनका अधिक सम्बन्ध वाणी से है।

मनष्य के श्रेष्ठ या दुष्ट होने की पहचान वाणी से ही होती है। गुण-अवगुण का पता भी वाणी से ही चलता है।

मनुष्य अपने मनुष्यत्व या किसी और पर कलंक लगाता है तो वाणी या हाथ से ही लगाता है। इसलिए इन्हें क्रम प्रधान इन्द्रिय मानकर इन्हें पहले रखा गया है।

यही दोनों इन्द्रिया बड़ी दानी भी है। यही शासक और शक्तिशाली भी हैं। दंड देने वाली यही हैं और दंड भी इन्हीं को बड़ा मिलता है। इन्हीं की ही प्रधानता से मनुष्य प्रधान माना जाता है। पशु में न तो वाक् (वाणी) है, और न ही हाथ। मनुष्य द्रव्य का दान हाथ से करता है और ज्ञान का दान वाणी से। इसलिए शास्त्रकारों ने इन मुख्य और मौलिक चीजों को पहले रखा है जो मनुष्य की आत्मिक उन्नति का साधन हैं।

एक बार की बात है, ऋषि दयानन्द जी महाराज जेहलम में उपदेश देने गए थे। वहाँ एक तहसीलदार भी था-पं. अमींचन्द मेहता। वह रिश्वत खाने वाला, शराबी और व्यभिचारी था, किन्तु रागी था। एक बार कोई सज्जन उन्हें महाराज के सत्संग में ले गया। उपदेश खत्म होने के बाद किसी ने कहा, 'महाराज! यह तहसीलदार साहब बड़े रागी हैं और कवि भी हैं।' महाराज बोले कुछ सुनाओ! तहसीलदार साहब ने गाया। महाराज अति गदगद हो उठे और बोले, 'अमींचन्द! तुम हो तो हीरा किन्तु कीचड़ में पड़े हो।' बस, यही शब्द थे जिन्होंने अमींचन्द की काया पलट कर दी। उन्होंने तुरन्त सारे दुर्व्यसन त्याग दिए। मन और मस्तिष्क में एक ही रट लगी रहती। जब भी कोई कुवासना मन में आती तो तुरन्त महाराज के शब्द आकर रक्षा करते। मन कह उठता, 'अमींचन्द! तुम हो तो हीरा किन्तु कीचड़ में पड़े हो।' यह घटना प्रसिद्ध हुई। सरकारी अफसरों ने आज्ञा भेजी-आपको अफसर माल बनाया जाता है। इन्हें तरंग आई, त्यागपत्र भेजा-

नहीं प्यारी तहसीलदारी, नहीं जंची दरगार।
यदि रखो अपनी सेवा में, किंकर चौकीदार।
हूँ गवर्नर तब क्या बनेगा, जाऊँगा अन्त सिधार।
अमीचन्द जैसे नीच को तारो!
हे पिता, पतित उद्धारणहार!

अब यूं न समझिए कि यह अंगस्पर्श मन्त्र साधन है साध्य का साधन के बिना सिद्धि सम्भव नहीं होती। अंत:करण की पवित्रता होती है कर्म से, कर्म किया जाता है शरीर से/शरीर संगठन है कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों का। बल बढ़ेगा तब जब इन्द्रियों का दमन करेगा, संयमी बनेगा। यश बढ़ेगा तब जब दूसरों की सेवा करेगा। सेवा करने के लिए धन-सम्पति चाहिए। धन-सम्पति का साधन है व्यवहार। यह व्यवहार इन्द्रियों के सिवा और कौन कर सकता है? अत: हमें इन इन्द्रियों से सदैव शुभ कर्म करके ही यश एवं बल प्राप्त करना चाहिए।

– द्वारा श्रीमती इरा खन्ना, प्रधानाचार्य, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

समिदाधान, पंच घृताहुति तथा अयन्त इध्म आत्मा

❐ विश्वेन्द्रार्य

आचार्च प्रवर देव दयानन्द सरस्वती ने 'ओम अयन्त इध्म आत्मा. ' इस मन्त्र से समिदा धान करने एवं पञ्चघृताहुति देने का विधान किया है। कुछ सज्जनों का विचार है कि यह वेद मन्त्र नहीं है फिर स्वामी जी ने इसके द्वारा समिधा चढ़ाने एवं पञ्चघृताहुति देने का विधान क्यों किया है? इसका उत्तर हम वैदिक यज्ञों के महान् शोधकर्ता पं. वीरसेन जी वेदश्रमी के शब्दों में देना चाहेंगे। वे लिखते हैं कि हमारे संस्कार एवं अन्य यज्ञों में जो मन्त्र वेद के नहीं है, ब्राह्मण ग्रन्थों के हैं, वे वेदानुवचन कर्मकाण्ड की पूर्ति के लिए ऋषियों ने बनाये और प्रयुक्त किये हैं। कुछ लोग उनको हटाने का परामर्श देते हैं। ऐसा परामर्श ग्राह्य नहीं है। वेदानुवचन मन्त्रों की रचना कर्मकाण्ड का अंग है, अत: उन्हीं के प्रयोग से कर्मकाण्ड को पूर्णता प्राप्त होती है। उनको महर्षि ने मान्य किया है, अत: हमें भी मान्य करना चाहिए।

आर्य विद्वान पं. जयदेव जी विद्यालंकारानुसार-'धर्मसूत्रकारों ने मन्त्रभाग और ब्राह्मण भाग-दोनों को वेद नाम दिया है। मूल वेद-संहिता में ब्राह्मण भाग नहीं आता। वेदों के सम्बन्ध में मनु की धारण है कि-**'वेदोऽखिलो धर्म-मूलम्। स्मृतिशीले च तद्विदाम।** (12/6) समस्त वेद धर्म का मूल है। उसको स्मरण कर बनाये धर्मशास्त्र और शील-आचार ये भी धर्म का मूल है।'

अत्यन्त इध्म आत्मा इस मन्त्र को महर्षि दयानन्द के तथा कथित कुछ भक्तों ने विवादास्पद बनाने का भी अत्यन्त प्रयास किया है। श्री इन्द्रदेव मुनि आदर्श गुरु कुल शाही, पीलीभीत (उ.प्र.) स्वप्रकाशित 'संस्कार पद्धति' (पूर्वार्द्ध) के प्राक्कथन में लिखते हैं कि 'संस्कार विधि' के सामान्य प्रकरण में 'अयन्त इध्म, मन्त्र से पाँच आज्याहुतियां लगाना बिल्कुल निरर्थक और अवैधानिक है, क्योंकि 'अयन्त इध्म.' से पांच आहुतियां लगाना किसी भी संस्कार अथवा दैनिक हवन आदि में कहीं भी विशेष आदेश न होने से उचित नहीं है। होम का आरम्भ आधारावाज्य भागाहुति से होता है। यदि उसमें पहले 'अयन्त इध्म से पांच आहुतियां लगा ली जायेगी तो 'आदि विगड़ जायेगा। अत: 'अत्यन्त: इध्म' से पाँच आज्याहुतियाँ लगाना बिल्कुल निरर्थक और अवैधानिक है, क्योंकि 'अ-यन्त इध्म.' से पांच आहुतियां लगाना किसी भी संस्कार अथवा दैनिक हवन आदि में कहीं भी विशेष आदेश न होने से उचित नहीं है। होम का आरम्भ आधारावाज्य भागाहुति से होता है। यदि उसमें पहले 'अयन्त इध्म. से पाँच आहुतियां लगा ली जायेगी तो आदि विगड़ जायेगा। अत: अयन्त इध्म.' से पाँच आहुतियाँ नहीं लगानी चाहिए। सूची पत्र में ऋषि द्वारा पंचाहुति का उल्लेख भी न होने से यह मन्त्र स्पष्टतया प्रक्षिप्त है। समिदाधान में 'अयन्तइध्म.' से पहली समिधा भी नहीं चढ़ानी चाहिए, क्योंकि कि 'अयन्त इध्म.' आश्वलायन गृह्य सूत्र 1.60.22 में समिधा चढ़ाने का विधान नहीं है। ऋषि दयानन्द द्वारा हस्तलिखित कॉपी में 'अयन्त इध्म.' मन्त्र नहीं है। प्रेस कॉपी के लेखन में, जहां पर लिखना चाहिए था, नहीं लिखा है और पांच आहुति लगाने का प्रक्षेप कर दिया गया है।

पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक 'अयन्त इध्म.' मन्त्र के सम्बन्ध में अपनी वैदिक नित्य कर्म विधि नामक पुस्तक के पृष्ठ 212 पर लिखते हैं कि-'संस्कार विधि में तीन समिधाओं के लिए चार मन्त्रों का विधान मिलता है।' संस्कार विधि की शुद्ध प्रतिलिपि (प्रेसकॉपी) में पहले तीन ही समिदाधान के मन्त्र थे, उसी प्रतिलिपि में 'अत्यन्त इध्म.' मन्त्र हाशिये पर बढ़ाया गया और तीन मन्त्रों की दृष्टि से पूर्व लिखे गये, आहुति-प्रदान सम्बन्धी भाषा के लेख में भी परिवर्तन किया गया। मन्त्र का लेखक अन्य व्यक्ति है, परन्तु तीन मन्त्र सम्बन्धी पूर्व भाषा पाठ को चार मन्त्रों के साथ सम्बद्ध करने के लिए भाषा पाठ में जो परिवर्तन किया गया है, वह ऋषि दयानन्द के हाथ का है। इससे यह स्पष्ट है कि 'अयन्त इध्म.' मन्त्र का परिवर्धन उनके आदेशानुसार किया गया था। अत: जो व्यक्ति 'अत्यन्त इध्म.' मन्त्र को प्रक्षेप मानते हैं, वह अयुक्त है।'

लोगों ने समिदाधान और पञ्चधृताहुति के मन्त्र 'अयन्त इध्म.' को विवादास्पद बना दिया है। यदि हम श्री इन्द्रदेव मुनि की बात को मान लेवें कि 'अयन्त इध्म.' मन्त्र संस्कार विधि के हाशिये पर है, साथ ही प्रथम प्रतिलिपि में नहीं है, तो अन्य पाठों को भी निकालना पड़ेगा, जो कि हाशिये पर है, प्रथम प्रतिलिपि में नहीं है और द्वितीय प्रतिलिपि में है।

जैसे कि 'संस्कार विधि' की द्वितीय प्रतिलिपि (हस्तलेख) में 'ओं भूर्भुव: स्व:' इस मन्त्र का उच्चारण कर ब्राह्मण, क्षत्रिय वा वैश्य के घर से अग्नि ला अथवा' इत्यादि अनेक पाठ हाशिये पर ही हैं, इन सबको निकालो। 'अयन्त इध्म.' मन्त्र तो तो 'चेद्ध' तक मूल में है और 'वर्द्धय' से लेकर हाशिये पर है। वास्तविक बात यह है कि हस्तलेखों पर काम करना भी एक कला है। जिस व्यक्ति ने यह विद्या नहीं सीखी, उसको समझाया भी नहीं जा सकता। जो लोअर रिसर्च में होकर नहीं निकला, वह हायर रिसर्च नहीं कर सकता। यह अनुसंधान का सिद्धान्त यथार्थ है।

हमारे ऋषि ने स्वयं 'वर्णोच्चारण शिक्षा' का हस्तलेख प्राप्त करके सम्पादित किया। ऋषि के काल में अनेक ग्रन्थों का मुद्रण भी नहीं हुआ था। ऋषि को हस्तलेखों पर ही कार्य करना पड़ा था। वे हस्तलेख परोपकारिणी सभा के संग्रह में अब भी विद्यमान हैं। यद्यपि कुछ चोरी भी हो गये हैं, तथापि बहुत संग्रह है। अत: ऋषि के ग्रन्थों में हेराफेरी का जो स्वभाव पण्डितों और प्रकाशकों को भी पड़ गया है, वह अत्यन्त घातक है। (आ. विश्वश्रवा)

अजमेर में आर्य विद्वानों की गोष्ठी में निश्चय किया गया कि 'अयन्त इध्म.' यह मन्त्र प्रक्षिप्त नहीं है।

दि. 14/11/1668 को ऋषि उद्यान अजमेर में स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती के सभापतित्व तथा पं. धर्मवीर विद्यालंकार (ज्वालापुर) के संयोजकत्व में 'अत्यन्त इध्य.' आत्मा. मन्त्र संस्कार विधि में प्रक्षिप्त नहीं है, इस विषय पर शास्त्रार्थ हुआ।

प्रक्षिप्त पक्ष के विद्वान थे-आचार्य रघुराज शास्त्री, श्री विद्यादेव जी त्रिवेदी, श्री इन्द्रदेव जी यति (पीलीभीत)।

प्रक्षिप्त न मानने वाले विद्वान थे- डॉ. ज्वलन्त कुमार जी शास्त्री (अमेठी), डॉ. सत्यव्रत राजेश (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय), डॉ. वेदपाल जी सुनीथ (अजमेर) (11 दिसम्बर 1668 को सार्वदेशिक साप्ताहिक में प्रकाशित)

अजमेर में सम्पन्न शास्त्रार्थ के संयोजक का स्पष्टीकरण हस्तलेख

विशेषज्ञ की आख्या में एवं पाण्डुलिपि में किये गये संशोधन स्वामी दयानन्द के सिद्ध हो जाते हैं, तो प्रक्षेप सिद्ध नहीं होगा और शास्त्रार्थ की पुनः आवश्यकता नहीं होगी।

इस शास्त्रार्थ में तर्कों से सिद्ध नहीं हो सका कि 'अयन्त इध्म.' मन्त्र प्रक्षिप्त है। उपस्थित विद्वानों की सम्मति और विशेषज्ञ (हस्तलेख) की आख्या ही निर्णायक होगी। दोनों के संग्रह करने का प्रयत्न कर रहा हूँ, परन्तु विपक्ष की यह बात सर्वथा असत्य है कि पाण्डुलिपियाँ दिखाई नहीं गई। (आचार्य धर्मवीर विद्यालंकार, 12/28 ज्वालापुर वानप्रस्थ आश्रम द्वारा मई 1884 के दयानन्द सन्देश मासिक पत्र में प्रकाशित अजमेर में आर्य विद्वानों का शस्त्रार्थ सम्पन्न होने के बाद एक पिता का अपने पुत्र को लिखा गया पत्र (30.11.1884)

प्रिय पुत्र ब्रह्मनिधि

अजमेर के शास्थार्थ में सम्पूर्ण आर्य जगत् के चोटी के विद्वान यह सिद्ध नहीं कर सके कि 'संस्कार विधि' महर्षि दयानन्द जी प्रणीत है और न यह सिद्ध कर सके कि 'अयन्त इध्म.' से समिदाधान और पञ्चघृताहुतियाँ करना वेदों और आर्य वचनों के अनुकूल प्रामाणिक है। मेरे नाम से डॉ. भवानी लाल भारतीय शास्त्रार्थ से एक घण्टेपूर्व भाग गये। श्री राजवीर शास्त्री भयभीत होकर छिप गये। प्रतिज्ञा नियमों के विरूद्ध एक घण्टे उपरान्त श्री सत्यव्रत जी राजेश गु.का. वि., श्री वेदपाल सुनीश, डॉ. ज्वलन्त कुमार जी से शास्त्रार्थ लिखित हुआ, तीनों मेरे प्रबल प्रमाणों व तर्कों से पराजित हुए। अपनी जबावदेही से बचने के लिए स्वामी ओमानन्द जी गुरुकुल झज्जर वाले खिसक गये। स्वामी सुमेधानन्द जी और संयोजक आचार्य धर्मवीर हारने वालों की पूरी सहायता शपथ लेकर करने लगे। वह भी आवाक् कर दिये, परास्त हो गये। –विद्यादेव त्रिवेदी (प्रभात आश्रम के छात्र ब्र. अश्विनी द्वारा प्रेषित तथा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के मुख पत्र 'दयानन्द सन्देश' मासिक मई 1884 में प्रकाशित)

दयानन्द सन्देश के सम्पादक श्री राजवीर जी शास्त्री द्वारा उपरोक्त पत्र का उत्तर इस प्रकार दिया गया–

यह पत्र श्री विद्यादेव त्रिवेदी को अपने पुत्र के नाम, जिसमें इतना भी ध्यान नहीं रखा गया है कि मैं किसको पत्र लिख रहा हूँ। इस अबोध बालक पर इस महाझूठ का क्या प्रभाव होगा?

लेखक का मेरे पर यह आरोप सर्वथा मिथ्या है, क्योंकि मिथ्या वह होता है जो हां कहकर उसके अनुसार न करे। लेखक हिम्मत करके दिखाये कि मेरी शास्त्रार्थ के लिए किसी ने स्वीकृति या सहमति ली हो। यह कितने आश्चर्य की बात है कि किसी ने स्वीकृति भी न ली हो और उन्मत की तरह बड़बड़ाना शुरु कर दिया है कि भयभीत होकर छुप गये। वह विजय का डंका बजाता फिर रहा है अन्यथा ऐसा कदापि नहीं लिखता कि संस्कार विधि महर्षि दयानन्द प्रणीत है या नहीं। (मई 1884 के दयानन्द सन्देश से)

निष्कर्ष–उपरोक्त विवेचन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि स्वामी जी ने ही इस 'अयन्त इध्म आत्मा.' मन्त्र को बढ़ाया है, यह प्रक्षिप्त कदापि नहीं है। स्वामी जी ने इसे मन्त्र की कोटि में माना है और समिदाधान एवं पञ्चघृताहुति देने का विधान किया है।

– प्राच्य वैदिक परिवार, ऊँचा गांव, मथुरा, उ.प्र.–281308

हे मनुष्यों परमात्मा के सत्य ज्ञान वेद के मार्ग पर चलो। पाखंडियों के अज्ञानतापूर्ण उपदेशों से सत्य के मार्ग को छोड़कर असत्य के मार्ग पर मत चलो। असत्य का मार्ग जीवन को दु:खी बनाता है। सत्य का मार्ग ही जीवन को सुखी बनाता है।

– स्वामी दयानन्द

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं

अथवा

गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 11,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

–: निवेदक :–

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

उपासना के मूलतत्त्व

❒ स्व. पं. भीमसेन जी विद्यालंकार

उपासना शब्द का स्पष्टार्थ-उप-समीप=आसन बैठना है। जिस समय कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के पास बैठ कर, पूजनीय भाव से अथवा सत्संग की भावना से श्रवण मनन व विचार विनिमय करता है तो हम कह सकते हैं कि अमुक व्यक्ति, अमुक व्यक्ति की उपासना कर रहा है। यह सामान्यार्थ आध्यात्मिक अर्थ में रूढ़ि हो गया है। इसीलिए गुरु, शिष्य और परमात्मा-आत्मा के आध्यात्मिक सम्बन्ध को उपासना शब्द से निर्दिष्ट किया जाता है। शिष्य गुरु की आत्मा परमात्मा की जिस विशेष पद्धति से आराधना-या स्मरण करता है वही विशेष उपासना विधि सम्प्रदाय का रूप धारण कर लेती है। इस उपासना विधि के विकसित होने में व्यक्ति, देश काल के भेद भी अपनी छाप अक्डित करते हैं। यह विविध छापें ही विविध सम्प्रदायों के नाम से प्रसिद्ध होती हैं। अंग्रेजी भाषा का (Religion) रिलिजन शब्द भी इस उपासना विधि को निर्दिष्ट करता है। रिलिजन शब्द का मूल अर्थ (faith loyalty to god n prophet) श्रद्धा अर्थात् परमात्मा और गुरु के प्रति भक्ति, निष्ठा तथा श्रद्धा की भावना है। उपासना विधियों की भिन्नता के कारण ही विधि सम्प्रदायों की सृष्टि हुई है। उपासना विधि में प्रयुक्त किये जाने वाले दर्शनीय दृश्यमान चिन्तों के समान आसमान होने की भावनाओं के कारण ही मानव समाज में झगड़े पैदा होते हैं। इन झगड़ों की उग्रता तथा नाशकारी परिणामों को देखकर ही **'न लिंग धर्म कारणम्'** दृश्यमान बाह्य चिह्न धर्म के कारण या निमित्त नहीं है, कहा जाता है।

उपासना के मूल तत्वों की खोज के लिये हमें इन उपासना विधियों में सर्व सामान्य तत्वों की खोज करनी चाहिए और उन तत्वों द्वारा इन विधि उपासना विधियों की भिन्नताओं को दूर करना चाहिए और यह प्रतिपादन करना चाहिए कि इन मूल तत्वों के साथ यदि किसी उपासना विधि का संघर्ष होगा तो सर्व सामान्य मूल तत्वों को ही मुख्यता देनी चाहिए।

योगदर्शन में पतञ्जलि मुनि ने पांच यम और 5 नियमों में इन सर्व सामान्य तत्वों का विवेचन किया है। मनुस्मृति में इन सामान्य तत्वों का परिगणन, **'धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः। धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्'**।। श्लोक में किया है। ऋषि दयानन्द ने इन तत्वों का उल्लेख आर्य समाज के 10 नियमों में किया है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में जिस उपासनाविधि का उल्लेख किया है वह इन्हीं यम नियमों, धर्म के 10 लक्षणों तथा आर्य समाज के 10 नियमों पर आश्रित है। ऋषि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट उपासनाविधि का किसी व्यक्ति, विशेष स्थान व देश विशेष के रीति रिवाजों के साथ सम्बन्ध नहीं है। इस उपासनाविधि का प्रयोग कोई भी व्यक्ति किसी भी रूप में किसी भी स्थान पर कर सकता है। योग दर्शन में इसी भावना को इस श्लोक में प्रकट किया है। **''शय्यासनस्थऽथ पथिव्रजन्वा, स्वस्थः परिक्षीण वितर्क जालः। संसार वीजक्षयमीक्षमाणः स्यान्नित्युक्तोऽमृत भोगभागी।।** इस उपासना पद्धति में बाह्य चिन्ह सहायक रूप में माने जाते हैं, परन्तु यह नहीं कि वह नहीं तो उपासना हो नहीं सकती। बाह्य चिन्ह प्रधान उपासना विधि में इससे उल्टी बात है। वहां चिन्हों के संग्रह संरक्षण के लिए सत्य अहिंसादि सार्वभौम तत्वों को भी छोड़ने में संकोच नहीं किया जाता। इस मनोवृत्ति के पैदा होने के कारणों में से एक मुख्य कारण यह है कि हम उपासनाविधि जैसी आध्यात्मिक भावना को भी सामाजिक व राजनीतिक श्रृंखलाओं से जकड़ने पर जोर देते हैं। साधरणतः 66 फीसदी लोग प्रतिफल की आशा से उपासना करते हैं। कहने को तो यही कहा जाता है कि हम निष्कामभाव से उपासना करते हैं परन्तु अनजाने किसी न किसी अदृश्य फल की आकांक्षा गुप्त रूप से हमारे हृदय में स्पंदित होती रहती है।

वर्तमान युग में व्यवहारोपयोगी आध्यात्मवाद के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने उपासनाविधि का फल निदर्शन आत्मिकबल प्राप्ति रूप में किया हैं। हमें भी इसी भावना से प्रेरित होकर उपासना करनी चाहिए। इस उपासनाविधि को मूर्तरूप, पंच महायज्ञ विधि में ब्रह्मयज्ञ (संध्या विधि) में दिया गया है। उपासना द्वारा परमात्मा का सांनिध्य तथा मानव जाति में भ्रातृभाव की भावना उसी व्यक्ति में प्रकट हो सकती है, जिसका शरीर, मन तथा आत्म-तीनों में सन्तुलित सम्बन्ध स्थापित हो। कमजोर शरीर वाला, तेजस्वी मन वाला भी, आत्मा तथा परमात्मा का ध्यान नहीं कर सकता। बलवान् शरीर वाले और कमजोर मन वाले की तो बात ही दूर की है। कमजोर शरीर निस्तेज मन वाला, आत्मा जैसी शक्ति को कैसे पा सकता है। इसीलिए संध्योपासनाविधि में प्राणायाम मंन्त्रों तक शरीर शुद्धि और शारीरिक बल संचय पर विशेष बल दिया है और उसके बाद अघमर्षण मन्त्र और मनसा परिक्रमा मन्त्रों द्वारा मनोबल को बढ़ाकर, दृष्यमात्र जगत् के कण-कण में परमात्मा की सत्ता का अनुभव करने का अभ्यास करने की प्रेरणा की है। उसके बाद उपस्थान मन्त्रों में जिन्हें उपासना मन्त्र भी कह सकते हैं आत्मा को परमात्मा के साक्षात् सम्पर्क मं प्राकृतिक शक्ति तथा प्राकृतिक वितर्कों से ऊपर उठकर ध्यान करने का संकेत किया गया है। जिस प्रकार प्राकृतिक जड़ जगत् सत्, रज, तम प्रधान प्रकृति के अत्यन्त समीप सूर्य व हिरण्यगर्भ हैं, उसी प्रकार चेतन जगत् में परम नित्य चैतन्य परमात्मा के समीप आत्मा जीवात्मा को ''चित्रं देवानां''-मन्त्र में 'सूर्य आत्मा' शब्द से निर्दिष्ट किया है।

इस अवस्था तक पहुंचने के बाद उपासक जीवात्मा गायत्री मन्त्र में निर्दिष्ट स्थिति के अनुसार केवल मात्र परमात्मा के तीनों लोकों में फैले ऐश्वर्य का ही ध्यान करता है। इसी से अपनी बुद्धि को प्रेरित करता है और परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वह हमें ऐसी बुद्धि तथा धारण शक्ति दे जिससे हम मानवीय ऐश्वर्यों को देखकर उनसे प्रभावित न होकर उन द्वारा दिये प्राकृतिक ऐश्वर्यों का ही उपयोग करें। उपासना विधि के इन मूल तत्वों का वर्णन ही सामवेद में विशेष रूप से पाया जाता है। सामवेद में **अहं सूर्य इवाजनिः** आदि मंत्रों में उपासक को सूर्य की भांति जीवन व्यतीत करने का उपदेश दिया है। तभी मनुष्य का शरीर, मन, आत्मा, एक आध्यात्मिक भावना से अनुप्राणित हो सकता है। ऐसे व्यक्ति ही मनुष्य मात्र में आत्मानुभव कर सकते हैं और उनकी दृष्टि में जन्म जाति छूत अछूत के भेद भाव नहीं पैदा होते। इन मूल तत्त्वों को सामने रखते हुए यदि हम उपासना करेंगे तो संसार में हम शान्ति स्थापित करने में सहायक बन सकेंगे।

उपासना सम्बन्धी जिज्ञासाओं के कुछ समाधान

एक बार किसी जिज्ञासु ने अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी से

(शेष पृष्ठ 22 पर)

सब कुछ परमात्मा के प्रकाश से चमक रहा है

❒ ओमप्रकाश आर्य

इस सृष्टि में दो प्रकार के पिण्ड हैं-स्वत: प्रकाशमान और परत: प्रकाशमान। आकार के आधार पर उनके भेद हैं- स्थूल और सूक्ष्म। लघु और विशाल। दो प्रकार के लोग हैं-जड़ और चेतन। नक्षत्र स्वयं प्रकाशमान पिंड हैं। जैसे-सूर्य। चन्द्रमा एवं अन्य ग्रह परत: प्रकाशमान हैं, उनमें स्वयं का प्रकाश नहीं है, वे सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हैं। उसी प्रकार जो वस्तु दिखाई देती है वह स्थूल है और जो दिखाई नहीं देती-छोटा होने के कारण वह सूक्ष्म है। कुछ पिण्ड बहुत बड़े-बड़े हैं और कुछ छोटे-छोटे। जैसे-सूर्य सौरमंडल में सबसे बड़ा है, उससे भी बड़े-बड़े नक्षत्र हैं। चन्द्रमा छोटा है। पृथिवी भी छोटी है। कुछ चलने-फिरने वाले जीवधारी हैं। जैसे-मनुष्य, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु आदि। कुछ अचर हैं। जैसे-वृक्ष, वनस्पतियां। इसके अलावा जड़ पदार्थ हैं-नदी, पहाड़, वायु, जल, अग्नि आदि। इन सबमें परमात्मा का प्रकाश व्याप्त है। सब उसी के प्रकाश से चमक रहे हैं। अथर्ववेद कहता है-

रोचसे दिवि रोचसे अन्तरिक्षे
पतङ्ग पृथिव्यां रोचसे रोचसे अप्स्वन्तः।
उभा समुद्रौ रूच्या व्यपिथ देवो देवासि महिषः स्वर्जित॥

– अथर्व. 13.02.30

अर्थ-''(पतङ्ग) हे ऐश्वर्यवान् (जगदीश्वर!) तू (दिवि) प्रकाशमान (सूर्य आदि) लोक में (रोच से) चमकता है। तू (अन्तरिक्षे) मध्य लोक में (रोचसे) चमकता है। तू (पृथिव्याम्) पृथिवी (अप्रकाशमान) लोक में (रोचसे) चमकता है। वह (अप्सु अन्तः) प्रजाओं (प्राणियों) के भीतर (रोचसे) चमकता है। (उभा) दोनों (समुद्रौ) समुद्रों (जड़-चेतन समूहों) में (रूच्या) अपनी रूचि (प्रीति) से (वि आपिथ) तू व्यापा है। (देव) हे प्रकाशस्वरूप (देव:) तू व्यवहार जाननेवाला (महिष:) महान् और (स्वर्जित) सुख का जितानेवाला (असि) है।''

परमात्मा से कोई स्थान खाली नहीं है। वह सर्वत्र सबमें व्याप्त है। इसीलिए उसका कण-कण में निवास बताया गया है। इस दृश्य-अदृश्य ब्रह्माण्ड में जितने लोक-लोकान्तर हैं उनमें उसी का प्रकाश है। सूर्य के प्रकाश से सौरमंडल प्रकाशित है किन्तु वह प्रकाश सूर्य में कहाँ से आया? अन्य जितने पिण्ड हैं जो स्वत: प्रकाशित हैं उनमें वह प्रकाश कहाँ से आया? वे किसके प्रकाश से प्रकाशित हो रहे हैं? निश्चय ही इसका संकेत परमात्मा की ओर जाएगा। असंख्य ब्रह्माण्ड हैं। आकाश अनन्त है। सबमें व्याप्त होने से परमात्मा भी अनन्त है। इसी बात को सामवेद कहता है-

''मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः।'

अर्थात् वह परमात्मा दूर दिशा और दूर देश में जाने पर भी प्राप्त होता है। कहने का आशय यह है कि आप किसी भी दिशा में चले जाओ, कितनी भी दूर चले जाओ, दूर देश, दूर दिशा में भी, वह वहाँ पहुँचा हुआ है। इस जगती में जितने भी जड़-चेतन प्राणी हैं उन सबमें वह व्याप्त हो रहा है। इसी व्याप्ति के कारण उसको सर्वव्यापक कहा गया है। प्रकाशस्वरूप होने के कारण व सबको प्रकाशित करने के कारण उसे देव की भी संज्ञा प्राप्त है। वह सब प्राणियों के हृदय में विद्यमान होने के कारण सबके व्यवहार को जानता है। मनुष्य जो कुछ सोचता है, करता है परमात्मा सबसे पहले उसको जान लेता है। अनुचित कार्य रोकने के लिए आत्मा को प्रेरित करता है। किन्तु लोग उसकी सूक्ष्म प्रेरणा की ओर ध्यान नहीं देते, उसकी मूक आवाज को नहीं सुनते और अनुचित कार्य कर डालते हैं। जो उसकी मूक आवाज को सुनता है, उसकी प्रेरणा को पहचानता है, ध्यान देता है, वह सदैव नेक कर्म करता है और उसके बताए मार्ग पर चलकर सर्वसुखों को प्राप्त करता है।

यदि लोग वेद के इस मन्त्र पर ध्यान दें और विचार करें तो ईश्वर के नाम पर मची भागदौड़ और सारी भ्रांतियाँ मिट जाएँ। जब वह सबके अन्दर विद्यमान है तो उसको अपने अन्दर क्यों नहीं देखते? क्यों बाहर की दुनिया में व्यर्थ के चक्कर लगाते हैं। धन नष्ट करते हैं और व्यर्थ के लड़ाई-झगड़े मोल लेते हैं। जो चीज अन्दर मिलनी है उसे बाहर खोजते हैं। यह अज्ञानता नहीं तो और क्या है? हम वेद की मानेंगे नहीं और निरर्थक उसके नाम पर अपने को ठगाते फिरेंगे। जरा आसमान की ओर मुंह करके तो देख लो। रात में तारों की दुनिया तो निहार लो। समुद्र की धारा को तो देख लो। पहाड़ों के पास खड़े तो जाओ। एक फूल की सुन्दरता तो देख लो। चित्र-विचित्र पक्षियों पर नजर तो दौड़ा लो। सूर्यास्त व सूर्योदय को तो देख लो। निश्चय ही उस परमात्मा का बोध होगा। उसके होने का प्रमाण मिल जाएगा। ये पदार्थ मूक भाषा में आपको बहुत कुछ परमात्मा के बारे में जानकारी दे देंगे। सबमें व्याप्त परमात्मा हँस रहा है। मूक भाषा में बोल रहा है। अपने मौजूद होने की कहानी कह रहा है पर हम उसको नहीं देखते। हम तो देखते हैं कौन सा मंदिर अच्छा है? कौन सी मूर्ति सुन्दर है? कहाँ पर अधिक संख्या में लोग जा रहे हैं? कहाँ पर जाने पर चमत्कार हो जाएगा? कौन-सी मूर्ति चमत्कार दिखा रही है? कहाँ पर कोई अजीबो-गरीब वस्तु दिखलाई पड़ेगी? बस परमात्मा के नाम पर यही सब हो रहा है। अन्ततोगत्वा मिलता कुछ नहीं है। अत: वेद की सुनो! वेद की मानो। वेद को पढ़ो। वेद को जानो। वेदानुसार चलो। तभी कल्याण होगा अन्यथा नहीं।

– आर्य समाज रावतभाटा, बाया कोटा (राजस्थान)

प्रवेश प्रारम्भ

वैदिक संस्कृति का संवाहक

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया

यह गुरुकुल दिल्ली से 100 किलोमीटर एवं जयपुर से 150 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। अत: आपसे निवेदन है कि आप गुरुकुल में अधिक से अधिक संख्या में कन्याओं को प्रवेश दिलाकर आर्ष सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में योगदान दें।

गुरुकुल की विशेषताएं- ❑ कक्षा 6 से 9 तक तथा 11वीं व शास्त्री प्रथम वर्ष में प्रवेश प्रारम्भ। ❑ महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से मान्यता प्राप्त।

सम्पर्क करें- आचार्या प्रेम लता, फोन-01495-270503, मो. 09416747308, **संयोजक- श्रीमती अरूणा सतीजा,** दूरभाष: 0141-2623732, मो. 09460183872

बाल व्यक्तित्व-निर्माण में शिक्षकों की भूमिका

❐ आचार्य भगवानदेव वेदालंकार

1. शिक्षक और शिक्षा का सम्बन्ध- किसी भी शिक्षा प्रणाली का एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटक 'शिक्षक' है। हर युग में शिक्षा का महत्व रहा है। जब तक धरती पर मनुष्य का जीवन रहेगा, तब तक शिक्षा का महत्व भी बना रहेगा। शिक्षा को 'प्रकाश' भी कहा जाता है, शिक्षा को ही मनुष्य का तीसरा 'नेत्र' खोलने वाला सूत्र भी माना गया है। जो 'शिक्षक' के बिना नहीं प्राप्त होता। शिक्षा देने वाले व्यक्ति को 'शिक्षक' कहा जाता है। शिक्षक का गहरा ज्ञान व उसका ऊँचा चरित्र ही शिक्षार्थी का गहरा ज्ञान व उसका ऊँचा चरित्र ही शिक्षार्थी को प्रेरित करता है। बाल व्यक्तित्व के निर्माण में भी शिक्षक की विशेष भूमिका है।

2. वैदिक-संस्कृति में बच्चों के तीन उत्तम शिक्षक- वैदिक संस्कृति में बाल व्यक्तित्व के निर्माण में तीन उत्तम शिक्षक माने गये हैं-

''मातृमान पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद''

यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। ''जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी बालक ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य वह संतान बड़ा भाग्यवान् जिसके माता और पिता धार्मिक विद्वान हों। जन्म से पांचवे वर्ष तक माता बालकों को शिक्षा करे, आठवें वर्ष तक पिता शिक्षा करे और नौवें वर्ष के आरम्भ में अपने सन्तानों को आचार्य कुल में अर्थात् जहां पूर्ण विद्वान और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करने वाली हों, वहाँ लड़के और लड़कियों को भेज दें''

3. 'माता' बच्चों के लिए कैसी कामना करे- आधुनिक युग के महान् शिक्षाशास्त्री आचार्य दयानन्द जी ने, भारतीय विचारधारा में विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली विद्या को ही शिक्षा नहीं माना वरन् शिक्षा का आरम्भ माता, पिता को आचार्य अथवा गुरु मानकर उनके द्वारा सिखाई बातों से भी माना है। ऋग्वेद के अनुसार माता अपने बच्चों के लिए कामना करती है कि **''मम पुत्राः शत्रुहणो अथो मे दुहिता विराट्''** अर्थात् मेरे पुत्र शत्रु नाशक हों, बाहिरी आक्रमणकारी शत्रुओं के भी नाशक हों और काम क्रोध आदि एवं अनाचार, भ्रष्टाचार और बुरी भावना रूप भीतरी शत्रुओं के भी विनाशक हों तथा मेरी कन्या 'विराट' विशेष रूप से शोभित हो अर्थात् अविद्या, अज्ञान अन्धकार और कुप्रथा आदि भ्रान्ति को मिटाने वाली हो।

4. 'शिक्षक' अनेक रूपों में- हमारे देश में ही नहीं, बल्कि सभी देशों में 'शिक्षक' के अनेक रूप हैं। 'शिक्षक' को ही 'गुरु' भी माना गया है। कहीं उसको 'आचार्य' का पद दिया गया है। 'शिक्षक' को आज के विद्यालयों में 'अध्यापक' नाम से भी जाना जाता है, जो बालकों को, अपने विषय को अधिकार पूर्वक पढ़ाता है। गुरु आज 'शिक्षक' बनकर अपने विद्यार्थियों को नाना प्रकार की शिक्षा देकर उनके व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

5. बालकों को 'शिक्षक' की प्रेरणायें- जीवन की यात्रा में, बालकों के व्यक्तित्व निर्माण में, शिक्षकों की विशेष आवश्यकता है। 'शिक्षक' बालक के सर्वांगीण विकास के लिए सबसे पहले तो शरीर को स्वस्थ रखने की शिक्षा करते हैं। बालकों को नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए, जिससे बालक शारीरिक दृष्टि से बलवान् बनें क्योंकि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है।

'शिक्षकों का बालकों के व्यक्तित्व निर्माण में दूसरा काम है-उन्हें 'विद्याध्ययन' के लिए प्रेरित करना। बिना विद्या के मानव-प्राणी का जीवन निरर्थक है। विद्या से ही जीवन में प्रकाश आता है जिस किसी से भी हो, ज्ञान-लाभ करना चाहिए। विद्या प्राप्ति का समय युवावस्था ही है।

शिक्षकों का तीसरा काम है-बालकों को अपनी शिक्षा द्वारा ''समाज-सेवा के योग्य बनाना''। ऋषि-मुनि वनों के एकान्त में तपस्या करते हुए समाज से दूर रह सकते हैं, परन्तु साधारण व्यक्ति को तो समाज में रहना है, औरों के सुख-दुःख में भाग लेना, चिकित्सा करना, धनोपार्जन करना, माता-पिता और गुरु जनों की सेवा करना, इस सबकी 'योग्यता' बालक को शिक्षक के द्वारा दी जानी चाहिए।

6. एक अच्छे शिक्षक में क्या-क्या गुण हों?- शिक्षक अपने उत्तम आचरण से बालक को उचित दिशा देता है। वह हमारे लिए श्रद्धा तथा सम्मान का पात्र होता है। एक प्रसिद्ध कहावत है-

''पानी पीजे छानकर, गुरु कीजे जानकर''

वेदों के प्रसिद्ध विद्वान डॉक्टर प्रशान्त वेदालंकार जी का मानना है कि ''जहां गुणी स्त्री पुरुष पढ़ाने वाले होते हैं वहाँ विद्या, धर्म और सदाचार की वृद्धि होकर प्रतिदिन आनन्द ही बढ़ता रहता है।''

7. शिक्षक में विशेषतायें- शिक्षक, आचार्य, गुरु, पण्डित, उपाध्याय आदि सभी शब्द हमारी संस्कृति में अध्यापक के लिए प्रयुक्त हैं जिसमें निम्न गुण होने चाहिये-शिक्षा देने वाला गुरु अपने विषय का पूर्ण विद्वान हो। साथ ही उसमें सुशीलता, मानवीयता, चरित्रता, निरभिमानी, सत्यवादी, धर्मात्मा, ईश्वर-विश्वासी, आस्तिक, परिश्रमशीलता, परोपकारी, वीर, धीर, गम्भीर, पवित्राचरण, शान्तियुक्त, दमन-शील, जितेन्द्रिय, प्रसन्नवदन जैसे गुण होंवे।

8. शिक्षकों का बालकों के प्रति कर्त्तव्य- ''बालक जब कभी कोई बुरी चेष्टा, बैठने-उठने में विपरीत आचरण, निन्दा, ईर्ष्या, द्रोह, विवाद, लड़ाई, बखेड़ा, चुगली, किसी पर मिथ्या दोष लगाना, चोरी-जारी, अनाभ्यास, आलस्य, अतिनिद्रा, अति भोजन, अति जागरण, व्यर्थ खेलना, इधर-उधर व्यर्थ गप-शप करना, विषय-सेवन, बुरे-व्यवहारों का कथा करना वा सुनना, दुष्टों के संग बैठना आदि दुर्व्यवहार करें तो उनको तुरन्त रोक देवें''। एक अच्छे शिक्षक का यह परम कर्तव्य है।

9. अच्छे बालकों का अपने शिक्षक के प्रति कैसा व्यवहार हो?- शिक्षक के साथ एक अच्छे बालक अथवा विद्यार्थी का व्यवहार अपने अध्यापक अथवा गुरु के साथ कैसा होना चाहिये? ''शिक्षार्थी बालक मिथ्या को छोड़कर सत्य बोलें, सरल रहें, अभिमान न करें, आज्ञा-पालन करें, अच्छे गुणों की प्रशंसा करें, निन्दा न करें। नीचे आसन पर बैठें, ऊँचे पर न बैठें। शान्त रहें, चञ्चलता न करें।

गुरु की ताड़ना पर प्रसन्न रहें, क्रोध न करें। जब वे शिक्षा करें, चित्त देकर सुनें, हाथ जोड़कर नम्र होकर उत्तर देवें, घमण्ड से न बोलें। शरीर और वस्त्र शुद्ध रखें। मैले कभी न रखें। जो कुछ प्रतिज्ञा करें, उसको पूरी करें। अच्छे व्यक्तियों का सदा मान करें, उनका

अपमान कभी न करें। उपकार मान के कृतज्ञ होवें। किसी के अनुपकारी होकर, कृतघ्न न होवें। पुरुषार्थी रहें, आलसी कभी न हों, जिस-जिस कर्म से विद्या-प्राप्ति हो, उस उस को करते जायें। जो-जो बुरे काम जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक आदि विद्याविरोधी कर्म हों, उनको छोड़कर सदा उत्तम गुणों की कामना करें। बुरे कर्मो पर क्रोध, विद्या ग्रहण में लोभ, सज्जनों से मोह, बुरे कर्मो से भय, विद्यादि शुभ गुणों से आत्मा की रक्षा से जितेन्द्रिय होकर शरीर का बल सदा बढ़ाते जायें।'' तभी बाल व्यक्तित्व के निर्माण में शिक्षकों की अहम भूमिका कारगर हो सकती है।

10. योग्य शिक्षकों की हर युग में आवश्यकता- जिस प्रकार सुयोग्य वैद्य, चिकित्सक रोग की खोज करके उचित उपचार और दवा बताते हैं, उसी प्रकार उत्तम शिक्षक व ज्ञान देकर मुक्ति का, कष्टों से बचने का, सुख का, शान्ति का मार्ग बताते हैं। 'गुरु' के मार्ग दर्शन के बिना चंचल मन वश में नहीं, 'मन' का अन्धेरा दूर नहीं हटता। जिस प्रकार मुकदमे में हम योग वकील का परामर्श लेते हैं। रास्ता भूल जाने पर, बड़े से विद्वान राह जाते राहगीर से रास्ता पूछते हैं। उसी प्रकार संसार को समझने के लिए, नाना विद्यायें, शिक्षायें ग्रहण करने के लिए योग्य शिक्षक, योग्य अध्यापक अथवा योग्य गुरु की खोज करते हैं।

11. शिक्षक हमारे राष्ट्र के गौरव हैं- भाइयो! और बहिनो! शिक्षक हमारे राष्ट्र के गौरव हैं। वे हमें विद्या देते हैं। हमारा अज्ञान दूर करते हैं। जीवन में भले-बुरे की पहचान करना सिखाते हैं। इसलिए अपने शिक्षकों का सदा सम्मान करना चाहिए। क्योंकि वह बाल व्यक्तित्व के निर्माण में, उनकी प्रतिभा के विकास में सदैव प्रयत्नशील रहते हैं। हम आशा करते हैं कि देश का सारा शिक्षक वर्ग, ईमानदारी से अपने देश के भविष्य इन बालकों का, भविष्य निर्माण करने वाला सिद्ध होगा। इसी में बच्चों का, शिक्षा जगत् का, देश के भावी नागरिक छात्रों का और सारे देश का वास्तविक कल्याण है। किसी कवि ने सत्य ही कहा है-

अच्छे आदर्शो का अभिनय, प्यारे बच्चों से करवाओ।
खेल-खेल में सच्चरित्रता की, उनमें बुनियाद बनाओ।।
यदि भविष्य उज्ज्वल करना है, तो बच्चों पर देना ध्यान।
बच्चे शिक्षित स्वस्थ बनेंगे, तो आयेगा सुखद विहान।।
शिक्षक भाइयो! बालक के बारे में सोचो,
बालक है हर घर की आशा।
सब मिल बालक का हित साधो है भविष्य की वह परिभाषा।।
जो देखेंगे वही करेंगे, बच्चों का है सहज स्वभाव।
बुरे दृश्य से उन्हें बचाओ, उनसे होगा सुखद प्रभाव।।

- 94 विकासनगर, फेस-3, हस्तसाल एरिया, निकट बाला जी मन्दिर,
नई दिल्ली-110059, दूरभाष725374627

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **5000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

गौ-दान : महा-दान

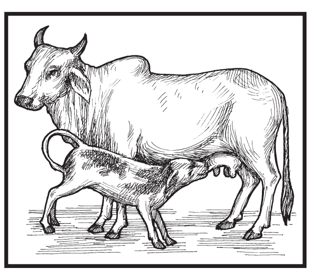

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,** के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

पुनर्जन्म एवं ऋग्वेद

❐ श्री शिव नारायण उपाध्याय

सामान्य रूप से वैदिक संस्कृति में कर्मफल की स्वीकारता है। मनुष्य के प्रत्येक कर्म का उसे उतना ही प्रतिफल अवश्य ही प्राप्त होता है, जीव कर्म करने में तो स्वतन्त्र है परन्तु उसका फल प्राप्त करने में ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र है।

मनुष्य जो कर्म करता है उनमें से कुछ का उपभोग को वह वर्तमान जीवन में ही प्राप्त कर लेता है परन्तु कुछ कर्मों का फल प्राप्त करना शेष रह जाता है। यही उसका प्रारब्ध बनाता है।

चूंकि मृत्यु के समय तक वह कई कर्मों का फल नहीं भोग पाया था, अतः उस कर्म-फल को भुगताने के लिए ही परमेश्वर की व्यवस्था से उसे दूसरा जन्म धारण करना होता है।

वेदान्त दर्शन के अनुसार प्रारब्ध के कारण ही उसे पुनर्जन्म में चार उपलब्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं- परिवार, आयु, भोग और यश।

मृत्यु के बाद जीवात्मा अपने सूक्ष्म शरीर में प्राणमय, मनोमय और विज्ञानमय कोष के साथ रहता है। प्राणमय कोष क्रियात्मक विभाग है। क्रिया शीलता इसी कोष से प्रारम्भ होती है। मनोमय कोष द्वारा आत्मा में भाव उठते हैं। इन्हीं भावों से प्रेरणायें उठती हैं। विज्ञानमय कोष संस्कारों को ज्ञान में परिवर्तित करने का कार्य करता है। मृत्यु के बाद पहले जीवात्मा अपने सूक्ष्म शरीर में हुई क्षति की पूर्ति करता है फिर वायु, जल, अन्न आदि में से किसी के द्वारा पिता के शरीर में प्रवेश करता है ऐतरेय उपनिषद् में इसका वर्णन इस प्रकार है-

पुरुषो ह वा अयमादितो गर्भो भवति।
यदेतद्रेतस्तदेतत्सर्वेभ्योङ्-गेभ्यस्तेजः
सम्भूतमात्मन्येव आत्मानं बिभर्ति तद्यदा
स्त्रियां सिञ्चत्यथैनज्जनयति तदस्य प्रथमं जन्म॥ ऐत. 2.1॥

वास्तव में पुरुष गर्भ को पहले धारण करता है। वीर्य से ही तो गर्भ होता है। यह वीर्य पुरुष के अंग-अंग के तेज का ही तो सार तत्त्व है। क्योंकि पुरुष के अंगों के तेज से ही गर्भ होता है तो यह कहना ठीक ही है कि पहले पुरुष वीर्य रक्षा द्वारा अपने को धारण करता है। उसे जब स्त्री में सिञ्चित करता है तो अपने को ही उत्पन्न करता है। यह उसका पहला जन्म है। विषय को आगे बढ़ाते हुये उपनिषद् कहता है-

तत् स्त्रिया आत्मभूयं गच्छति यथा स्वमङ्गं तथा।
तस्मादेनां न हिनस्ति साऽस्यैतमात्मानमत्र गतं भावयति॥ ऐत. 2.2॥

वह रेतस् स्त्री में जाकर उसका आत्मवत् हो जाता है, ठीक ऐसे ही जैसे अपना अंग। इसलिए विजातीय द्रव होने के कारण भी आत्मवत् हो जाने से वह स्त्री को कष्ट नहीं देता। स्त्री पुरुष के आत्मा को अपने भीतर सुरक्षित रखकर उसकी पालना करती है। अगले श्लोक में कहा गया है कि क्योंकि वह हमारी ही पालना करती है अतः उसकी पालना करना भी हमारा कर्तव्य है। स्त्री पुरुष को ही गर्भ में धारण करती है। जन्म के बाद पुरुष 'कुमार' की रक्षा करता है। इस प्रकार वह लोक में अपनी सन्तति को बढ़ाता है। अब ऋग्वेद के आधार पर पुनर्जन्म पर विचार करते हैं।

अयं देवाय जन्मने स्तोमो विप्रेभिरासया। अकारि रत्नधातमः॥ ऋ.1.20.1॥

स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुसार इस मन्त्र में पुनर्जन्म का विधान जानना चाहिए। मनुष्य जैसे कर्म किया करते हैं वैसे ही जन्म और भोग उनको प्राप्त होते हैं।

सं माग्ने वर्चसा सृज सं प्रजया समायुषा।
विद्युर्मे अस्य देवा इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः॥ ऋ. 1.23.24॥

पदार्थ- मनुष्यों को योग्य है कि जो ऋषिभिः=वेदार्थ जानने वाले के सह=साथ देवाः=विद्वान लोग और इन्द्रः=परमात्मा अग्ने=भौतिक अग्नि वर्चसा=दीप्ति प्रजया=सन्तान आदि पदार्थ और आयुषा=जीवन से मा=मुझे संसृज्ञ=संयुक्त करता है उस और मे=मेरे अस्य=इस जन्म के कारण को जानते और विद्यात्=जानता है इससे उसका संग और उपासना नित्य करें।

भावार्थ- जब जीव पिछले शरीर को छोड़कर अगले शरीर को प्राप्त होता है तब उसके साथ जो स्वाभाविक मानस अग्नि जाता है वही फिर शरीर आदि पदार्थों को प्रकाशित करता है जो जीवों के पाप पुण्य और जन्म के कारण हैं उनको विद्वान ही परमेश्वर के अतिरिक्त जानते हैं परन्तु परमेश्वर तो निश्चय के साथ यथा योग्य जीवों के पाप वा पुण्य को जानकर, उनके कर्मो के अनुसार शरीर देकर पुनः सुख-दुःख का भोग कराता है।

कस्य नूनं कतमस्यामृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम।
को नो मह्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयं मातरं व॥ ऋ 1.24.1

भावार्थ- इस मन्त्र में प्रश्न का विषय है कि कौन पदार्थ है जो सनातन पदार्थों में भी सनातन अविनाशी है कि जिसका अत्यन्त उत्कर्ष युक्त नाम का स्मरण करे वा जाने और कौन देव हम लोगों के लिए किस किस हेतु से एक जनम से दूसरे जन्म का सम्पादन करता और अमृत व आनन्द के कराने वाली मुक्ति को प्राप्त होकर भी फिर हम लोगों को माता-पिता से दूसरे जन्म से शरीर धारण कराता है। ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 154 के सभी 5 मन्त्रों में मृत्यु के बाद श्रेष्ठ जीव को दूसरे जन्म में कैसा परिवार मिलना चाहिए इस बात की कल्पना की गई हैं।

ये युध्यन्ते प्रधनेष शूरासो ये तनूत्यजः।
ये वा सहस्रदक्षिणास्ताँश्चिदेवापि गच्छतात्॥ ऋ. 10.154.3॥

पदार्थ- शूरासः=बलवान् ये= जो लोग प्रधानेषु=संग्रामों में युध्यन्ते=युद्ध करते हैं ये= जो तनूत्यजः=शरीर को छोड़ने वाले होते हैं वा=और ये=जो सहस्र दक्षिणा=सहस्त्रों का दान करने वाले होते हैं। हे जीव! तू जन्मान्तर में इन्हें भी प्राप्त हो।

भावार्थ- हे जीव! तू अगले जन्म में ऐसे परिवार में जन्म ले जिनमें ऐसे व्यक्ति हों जिन्होंने धर्म युद्ध में प्राण त्यागा हो। तुम ऐसे परिवार में भी जन्म लो जिनमें सहस्त्रों का दान करने वाले लोग रहते हो।

ये चित् पूर्व ऋतसाप ऋतावान ऋतावृधः।
पितृन् तपस्वतो यम ताँश्चिदेवापि गच्छतात्॥ ऋ 10.154.4॥

पदार्थ- ये चित्= जो पूर्वे=ज्ञान पूर्ण ऋतसापः= सत्य को मानने वाले ऋतावानः= यज्ञ करने वाले और ऋतावृधः= सत्य का प्रचार और प्रसार कर उसे बढ़ाने वाले हैं तपस्वतः= तपोनिष्ठ तान्= उन पितृन चित् अपि= जीवित माता पिता को भी यम=हे जीव! तू पुनः गच्छतात्=प्राप्त हो।

भावार्थ- जो पूर्ण ज्ञानी, सत्य को मानने वाले, यज्ञ करने वाले, सत्य को बढ़ाने वाले, तपोनिष्ठ जीवित माता-पिता हैं। हे जीव! तू पुनः उनको भी प्राप्त हो।

सहस्त्रणीथा: कवयो ये गोपायन्ति सूर्यम्।
ऋषीन तपस्वतो यम तपोजाँ अपि गच्छतात्।। ऋ. 10.151.5।।

पदार्थ- सहस्त्रणीथा:=सहस्त्रों प्रकार की दृष्टियों वाले कवय:= क्रान्तदर्शी ये=जो सूर्यम्=परमेश्वर को गोपयन्ति:=अपने ज्ञान और कर्म में सुरक्षित रखते हैं। यम=हे जीव! तपोजान्=तप में प्रसिद्ध तपस्वत:=तपस्वी ऋषीन्=ऋषियों को अपि= भी गच्छतात्=पुन: प्राप्त हो।

भावार्थ- सहस्त्रों दृष्टियों वाले, ज्ञानदर्शी, परमात्मा को सदा अपने ज्ञान और कर्म में सुरक्षित रखते हैं। हे जीव! तू तप से प्रसिद्ध तपस्वी उन मन्त्र द्रष्टा लोगों को पुन: प्राप्त हो।

जन्मन्जन्मन् निहितो जातवेदा विश्वामित्रेभिरिध्यते अजस्त्र:।
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्याऽपि भद्रे सौमनसे स्याम।। ऋ. 3.1.21।।

पदार्थ- हे जीव! परमेश्वर ने जन्मन्जन्मन्=जन्म जन्म में निहित:= कर्मो के अनुसार संस्थापक किया है। जातवेदा:=उत्पन्न हुए पदार्थो में न उत्पन्न हुए समान वर्तमान विश्वामित्रेभि:= समस्त संसार जिसका मित्र उन सज्जनों से अजस्र:=निरन्तर इध्यते=प्रबोधित कराया जाता तस्य=उसे यज्ञियस्य= यज्ञ के योग्य होते हुए प्राणी को सुमतौ= प्रशंसित यज्ञ में और भद्रे=कल्याण करने वाले व्यवहार में तथा सौमनसे=सुन्दर मन के भाव में अपि= भी हम लोग स्याम= होवें।

भावार्थ- सब मनुष्यों को प्रसिद्ध जगत् में सुख-दु:ख सञ्चित कर फल का देने वाला न हो तो व्यवस्था भी प्राप्त न हो। इसलिए सबको श्रेष्ठ बुद्धि उत्पन्न कर वैर आदि को छोड़कर सबके साथ सत्य भाव से वर्तना चाहिए। ऋग्वेद में इनके अतिरिक्त भी कई मन्त्र हैं जो पुनर्जन्म का समर्थन करते हैं परन्तु हम इस विषय को आगे न बढ़ाकर यहीं विराम देना पसंद करेंगे।

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)
शिवराजवती आर्या उप-प्रधाना
रामनाथ सहगल (मन्त्री)

दोषी कौन, नर या नारी

❐ कृष्णलाल अग्रवाल

आर्य समाज के निर्माता देव दयानन्द जी ने जब नारी की दयनीय दुर्दशा को देखा, इसका पुरुष प्रधान समाज द्वारा भरपूर शोषण हो रहा था, इसे वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था। इसके विधवा हो जाने पर इसका पुन: विवाह नहीं होता था। यह बाल्यावस्था में ही रात के अंधेरे में विवाह दी जाती थी। तो स्वामी जी को इसकी चिन्ता व्यापी। उन्होंने इसे शिक्षित कराने हेतु, गुरुकुलों की एवं अन्य शिक्षा संस्थानों की रचना कराई। इन्हें वेद का उपनिषदों का ज्ञान विज्ञान प्राप्त कराया। यह आर्य समाज के मन्त्रों से वेद मन्त्रों का उच्चारण करके इनकी व्याख्या करने वाली बनी। जीवन के 16 संस्कारों को विधिवत परिवारों में समापन कराने वाली बनी। निराकर ईश्वर का बोध कराने वाली बनी। विदेशों में भी गई और आर्य समाज का प्रचार प्रसार करने वाली बनी। भारत की अतीत की उज्ज्वल संस्कृति को जो यवन काल की सात सौ वर्षो की अधीनता में लुप्त हो गई थी, उसका पुन: अवलोकन कराने वाली बनी। परन्तु आज हमारे बहन भाईयों ने इस नारी की सुन्दर सात्विक छवि को धूमिल बनाना प्रारंभ किया है। यह इन आज के नये भगवानों, बापुओं एवं जगत् गुरुओं के प्रवचनों में नाचने लगी है। वह प्रवक्ता भी इन्हें ऐसा करने के लिए मना नहीं करते हैं। आर्य समाज के आयोजनों में ऐसा कभी नहीं होता है। वहां पर तो वेद मन्त्रों की तर्क संगत व्याख्या होती है। परन्तु आज यह नारी लक्ष्मण रेखा का उलंघन कर अपनी आर्थिक प्राप्ति की लालसा से मॉडल एवं मिस इंण्डिया और मिस वर्ल्ड की प्रतियोगिताओं में शामिल होकर अपना अंग प्रदर्शन कराने लगी हैं। आज नारी स्वयं अपना शोषण करने लगती है। दूरदर्शन एवं मीडिया भी अपने आर्थिक लाभ हेतु नारी की इस कमजोरी का फायदा उठा रहा है। फिल्मों में भी नारी अपना अंग प्रदर्शन करने वाली बनी है। पुरुष का भी दोष बनता है, वह नारी की सुन्दर सात्विक छवि से उसे पथ विचलित करा रहा है। स्वामी दयानन्द जी परदा के हामी नहीं थे, वह तो कहते थे कि बेटी तुम अपने मुख पर बिना आवरण के मार्ग पर चलो तुम्हें कहीं गिरना नहीं पड़े। अब दोषी कौन है? मैंने तो अपने विचार आपके समक्ष रख दिये हैं, निर्णय आपने लेना है।

- डी-322 (प्रथम तल), फेज-1, विवेक विहार, दिल्ली-95

टंकारा ट्रस्ट इंटरनेट पर
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा
www.tankara.com पर उपलब्ध है

स्वामी जी द्वारा अन्त समय ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो वह कौन सी इच्छा की बात कर रहे थे ?

❐ पं. उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक

महर्षि दयानन्द जी द्वारा मृत्यु समय कहे अन्तिम शब्द इस प्रकार हैं कि हे दयामय हे सर्वशक्तिमान ईश्वर तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो आहा? तून अच्छी लीला की। यही शब्द पं. लेखराम जी व अन्य जीवनी लेखकों ने लिखे हैं। अतः महर्षि दयानन्द ईश्वर की किस इच्छा की बात कर रहे हैं। क्या ईश्वर की इच्छा से उनकी मृत्यु हुई थी?

सामान्यतः अधिकांश श्रद्धालु यही मानते हैं कि ईश्वर की इच्छा से ही स्वामी जी की मृत्यु हुई। ऐसा मानना वेद के सिद्धांतों, आर्ष ग्रन्थों की मान्यताओं तथा स्वामी जी द्वारा रचित ग्रन्थों के आधार पर सर्वथा गलत होगा। यदि इस पक्ष को मान लें तो क्या स्वामी जी की मृत्यु परमात्मा की लीला थी। स्वामी जी ईश्वर की वाणी वेदों का प्रचार कर रहे थे वे वेद भाष्य से भी कोई उत्तम कार्य था। सम्पूर्ण मानव जीवन में ईश्वर के बनाए वैदिक संविधान का प्रचार कर रहे थे। संसार में जो वेद विरूद्ध ईश्वरीय आज्ञा का उल्लंघन होकर अवैदिक कृत्य हो रहे थे, इनको रोकना क्या गलत था। ये सभी परमात्मा के कार्य हो रहे थे। भला ईश्वर इन शुभ कार्यों को क्यों रूकवाता। क्या नन्ही जान वेश्या का भी षडयन्त्र रचना, अंग्रेजी सरकार द्वारा षडयन्त्र द्वारा विष को और प्रभावी बनवाना तथा जगन्नाथ रेसाईये द्वारा कालकूट विष देना, क्या परमात्मा की इच्छा से हुआ था और यह सभी कार्य स्वामी जी की मृत्यु के कारण बने थे। क्या स्वामी जी के उपदेश गलत थे।

ऐसा मानने पर वस्तुतः न तो हमने स्वामी जी को समझा और नहीं उनके सिद्धातों को समझा। अतः पौराणिक जगत व अन्य मतवालों को ऐसा मानने से एक मुद्दा मिल गया है। अतः स्वामी जी की मृत्यु का परमात्मा की इच्छा व लीला से कोई सम्बन्ध नहीं है। वह तो विभिन्न षडयन्त्र रचने वालों की अपनी कर्म करने की स्वतन्त्रता थी। क्योंकि ईश्वरीय व्यवस्था में मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है, चाहे पुण्य कर्म करे या पाप कर्म करें और फल भोगने में परतन्त्र है।

समाधान- यह तो एक महान ईश्वर भक्त की अपने अन्तिम समय में परमात्मा के प्रति सच्ची श्रद्धा थी, जो इस प्रकार व्यक्त हुई और स्वामी जी के शब्द भी विचारणीय हैं हे ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो। आहा? बहुत प्रसन्नता पूर्वक शब्द कहे गये थे, कि हे भगवान तेरे द्वारा जो जीवों के कल्याण की इच्छा है, वह पूर्ण हो। स्वामी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन मानव मात्र के कल्याण के लिए लगाया था और इसी कल्याण की इच्छा अन्तिम समय में भी कर गये। एक महान ईश्वर भक्त जाते हुए किसी प्रकार की कोई शिकायत न करते हुए नहीं गया। इसलिए उनकी मृत्यु ईश्वर इच्छा से नहीं हुई, ईश्वर इच्छा से उनकी मृत्यु मानना, उनके सिद्धांतों व आर्ष ग्रन्थों के विरूद्ध होगा।

एक बात और- स्वामी जी की जीवनी पं. लेखराम जी द्वारा उनकी मृत्यु के पांच वर्ष बाद खोज की गयी और वह पूरा जीवन चरित्र नहीं लिख पाये थे कि 6 मार्च 1986 मे पं. लेखराम की हत्या कर दी गयी। उसके उपरान्त जो स्वामी जी जीवनी पर सामग्री एकत्रित की थी, उस पर लिखा गया। उसके बाद देवेन्द्र बाबू मुखोपाध्याय जी ने भी 15 वर्ष के लगभग उनकी जीवनी पर अनुसंधान किया और वह भी पूरी जीवनी नहीं लिख पाये। केवल चार अध्याय ही लिख सके। वह भी मृत्यु को प्राप्त हुए और उसी सामग्री के आधार पर पं. घासीराम जी ने जीवन चरित्र पूरा किया।

अब विचार करना चाहिए- इतने वर्षो बाद लिखे गये अन्तिम शब्द वैसे ही कहे गये थे, वह पूर्णतया सम्भव नहीं हो सकता है। अगर जीवन में हम देखें तो किसी के वाक्यों को दूसरे दिन उसी प्रकार अक्षरशः दोहराना सम्भव नहीं होता। यदि मान भी लें तो स्वामी जी के यह अन्तिम शब्द थे और ईश्वर की इच्छा से उनकी मृत्यु हुई। यह मानना सर्वथा वेद के विरुद्ध, स्वामी जी के सिद्धांतों के विरूद्ध होगा। इसलिए स्वामी जी द्वारा कहे गये शब्द ईश्वर द्वारा जीवों के कल्याण की इच्छा सही है। वही ईश्वर की इच्छा है इसी उद्‌देश्य से ही तो परमात्मा जगत की रचना बार-बार अनन्तकाल से करता चला आ रहा है और जीवों को अलग-अलग शरीर कर्मानुसार कल्याण के लिए देता रहता है। इस संसार में जीव मानव शरीर पाकर ही चरमलक्ष्य मुक्ति को प्राप्त कर सकता है। परमात्मा के वेद ज्ञान द्वारा ही मानव श्रेष्ठ कर्म कर सकता है। यही परमात्मा की इच्छा है। इसी इच्छा को पूर्ण होने की बात अन्तिम समय में स्वामी जी कर गये। परमात्मा की जगत को रचने तथा पालन करने की अच्छी लीला है, जिसको स्वामी जी कह रहे हैं।

आशा है आर्य जगत के लेखक व विद्वानजन इस विषय पर विचार करके उज्ज्वल पक्ष आर्य जगत में रखेंगे। आर्य समाज को आर्ष ग्रन्थों व वेदानुकूल तथा महर्षि दयानन्द जी के सिद्धांतों के विरुद्ध कोई भी सिद्धांत नहीं मानना चाहिए।

- वैदिक प्रचारक, उत्तराखण्ड, मो. 9411512019

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

ऋषि दयानन्द स्त्री शिक्षा के पुनरूद्धारक

❒ डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

महर्षि दयानन्द सरस्वती का भारत के नव निर्माण में बहुत बड़ा सहयोग रहा है। देश की स्वतन्त्र कराने, स्त्री शिक्षा, शुद्धि, संस्कार, ईश्वर की सर्वव्यापकता आश्रम व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था, छुआछुत, ऊँच नीच, समाज में भेदभाव जातिवाद, अंधविश्वास, बढ़ते पाखण्डों पर कुठारघात, स्वराज का उद्घोष, भारत की आर्थिक स्थिति का सुधार आदि विषयों पर जागृति उपाय एवं वेद प्रचार जिन वेदों को विदेशी लोग गड़रियों के गीत कहते थे उनका मूल रूप विश्व के सामने ऋषि दयानन्द ने रखा।

महर्षि दयानन्द से पूर्व भारत में सती प्रथा प्रचलित थी। स्त्रियों को पति के साथ जल कर मरने के लिए विवश किया जाता था। डॉ. राम मोहन राय ने अपने परिवार में भी यह घटना देखी तो उनसे रहा न गया। लार्ड बैन्टिक से कानून बनाकर सती प्रथा को गैर कानूनी घोषित कराया। उस समय स्त्रियां की स्थिति अत्यन्त हीन व दीन थी। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था स्त्री को मात्र पैर की जूती के समान माना जाता था। पर्दा प्रथा जोरों पर थी। बाल विवाह प्रथा प्रचलित थी। बाल्यावास्था में विवाह कर दिया जाता था। ऋषि दयानन्द ने स्त्रियों में शिक्षा हेतु प्रचार किया और कहा कि स्त्री शिक्षित होनी चाहिए। स्त्री शिक्षित हो तो दो परिवारों का निर्माण कर सकती है। एक पिता का परिवार दूसरा विवाह पश्चात् पति का परिवार। इसके लिए ऋषि ने कन्याओं हेतु पाठशालाऐं खुलवाई उनमें स्त्रियां को शिक्षा हेतु प्रेरित किया। उन्होंने बताया प्राचीन काल में स्त्रियां पुरुषों की भांति वेद व शिक्षा प्राप्त करती थी। धनुर्विद्या प्राप्त कर युद्ध में भी जाती थी। गार्गी, कुन्ती, माद्री, मैत्रेयी, शकुन्तला, सीता, कैकेयी, विद्योत्तमा, मदालसा आदि महान विदुषी स्त्रियां वेद विद्या से ही प्रसिद्ध हुई।

बाल विवाह जैसी प्रथा को बन्द किया। पर्दा प्रथा को दूर किया विधवाओं का पुनर्विवाह होना चाहिए ऐसा जनता में प्रचार किया।

उस समय जब कन्याओं के लिए विद्यालय खुलवाए तब अनेक लोग कन्याओं की शिक्षा का विरोध किया करते थे। उनके घरों पर जब आग्रह करने जाते थे कि कन्याओं को विद्यालय भेजो तब उनके अभिभावक कन्याओं को जाने से रोकते थे दरवाजों पर लाठियां लेकर बैठ जाते थे परन्तु ऋषि व ऋषि के अनुयायियों ने कन्याओं की विद्यालयों में प्रवेश कराया। यह कार्य चलता रहा उधर समाज में जागरूकता का अभियान चलता रहा। ऋषि के इस पुनीत कार्य का परिणाम यह हुआ कि आज महिलाएं भारत वर्ष में उच्च पदों पर आसीन हैं। शिक्षा, न्याय, राजनीति, प्रशासनिक सेवाएं, चिकित्सा, विभाग में सेना आदि सभी सेवाओं में है। महिलाएं आज अन्तरिक्ष में भी कदम रख चुकी हैं। महिलाएं आज समाज में पुरुषों से पीछे नहीं है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने महिलाओं की शिक्षा का द्वार तो खोला ही उन्हें अन्ध विश्वास व पाखण्डों से दूर रहने का कहा पर्दा प्रथा का विरोध किया। महिलाओं को ऋषि के ज्ञान से आत्म बल मिला आज महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों से भी आगे चल रही हैं।

ऋषि ने भारत को स्वतन्त्र कराने स्वराज का उद्घोष करने से भी आगे का कार्य किया। उन्होंने शुद्धि का द्वार पुनः खोला भारत की पुरातन पवित्र मानवीयता की वैज्ञानिक विचारधारा वाली वैदिक संस्कृति का प्रचार किया। वर्ण व्यवस्था व आश्रम व्यवस्था का शुद्ध रूप बताया। महाराज मनु ने कहा था कि ब्राह्मण क्षत्रिय आदि वर्ण जन्म से नही कर गुण कर्मानुसार होते हैं।

ऋषि दयानन्द ने समाज से पाखण्ड व अन्धविश्वासों को दूर करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि मानव मात्र की शान्ति के लिए आवश्यक है कि सभी मत मतान्तर वाले एक दूसरे के लिए जो परस्पर विरोधी बाते हैं उन्हें दूर करे जो बाते सबके लिए एक जैसी है उन्हें मानें।

(शेष पृष्ठ 22 पर)

अपील

समस्त ऋषि भक्तों से विनम्र प्रार्थना है कि टंकारा में रोटी बनाने की मशीन जो कि विशेषकर ब्रह्मचारियों को अधिक सुविधाजनक गर्म रोटी प्राप्त हो सके को ध्यान में रखते हुए ही लगाई गई है। लगभग पुरे भारत से अपने-अपने घरों से और विशेषकर माँ के वात्सल्य से दूर घर की सुख सुविधाओं जैसे वातावरण हमारे ब्रह्मचारियों को गुरुकुल में भी प्राप्त हो। इस कारण से इस मशीन का महत्व ज्यादा है।

हम समस्त उन दानी माताओं को विनम्र प्रार्थना करना चाहते हैं कि इस मध्य में ब्रह्मचारियों पर ममतामय आर्शीवाद देते हुए सहयोग राशि अवश्य भेजें। जो एक बार में पूर्ण 2,50,000/- रूपया देंगे उनका नाम मशीन पर अंकित करवाया जाएगा।

आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

ધર્મ-ચાનક

પ્રસ્તુત લેખ ધર્મચાનક નામની પુસ્તિકા કે જેનું પ્રકાશન ઇ. સ. ૧૯૧૪માં થયું હતું તેનું સમ્પાદન છે. આજની તારીખમાં પણ વિષય એટલો જ મહત્ત્વનો છે એમ કહેવા કરતા વિષયનું મહત્ત્વ એ સમય કરતા પણ વધી ગયું છે એમ કહેવું યોગ્ય રહેશે.

પ્રસ્તુત ચાબખા ચોપાઈની ભાષા, જોડણી વિગેરે લગભગ જેમના તેમ રાખ્યા છે, આજની દૃષ્ટિએ એમાં

આ ચાબખા ચોપાઈ વાંચતા જણાશે કે એ વખતના આર્યો કેટલા જાગૃત હતા અને આજે આપણે ક્યાં છીએ

રમેશ મહેતા મો. ૦૯૪૨૭૦૦૧૧૧૯ / Email:- pt.rammehta@gmail.com

વાંચો ચરચા ચાબક રૂપ, હરી જનોને છે અનુપ;
નાસ્તીક જનને નહિ કામનું, સલિલ જનને કામ નામનું.

કબીરનો દોહરો

કામી તરે ક્રોધી તરે, લોભીકી ગત હોય;
સલીલ ભગત કબુ ન તરે, કહત કબીરા કોય.

ચાબકા ચોપાઈ

સલીલ સંગ મરવું ન મથી, સંગ કર્યામાં સાર જ નથી;
મુમતી મતીયા ને નાસ્તિક, જક્કી ઝાંઝીને નહી ઠીક,
તે શું લે સમજણનો સ્વાદ, મોક્ષેચ્છુ કરે બહુ યાદ
હરી જનોને વ્હાલું ઘણું, જ્ઞાન લેવું છે ધર્મ જ તણું,
ધરમી જનને આ તો મીષ્ટ, કંટાળી જાશે પાપીષ્ટ.
જેહ ધરમમાં આપણા ગયા, તેના તો અંજાણ્યા રહ્યા;
ધર્મમાં સમજ્યા નહીં પાધરૂ, તો ગાડર ભેગું ગાડરૂં.
ધરમે ધરમની કંઠી ઘણી, જુજવી રીત્યો તીલક તણી;
જુદો આકાર જુદો રંગ, શા કારણનો એ પ્રસંગ.
કારણ વણ કાર્ય નવ થાય, કારણ શોધો તો શોધાય.
મૂળ પુર્શે કાઢેલું જદા, તે રૂપ ગુણ સમજેલા તદા.
સમજેલાનો સંગ ન કરે, દીઠો ડોળ કરીને ફરે.
ધરમ જાણવો તેનો ફોક, માટે જમજો હરિજન લોક
પોતાના મૂળ ગુરુ જેહ, તેને જૈ પુછો સંદેહ.
ગુરુ ભાંગશે સઘળો ભેદ, પછી કોઈ નહિ પામો ખેદ,
બોધ કર્યો છે આ તમ માટે, ગુરુ પાસે પળો પુરપાટ.
પોત પોતાના ધર્મનું ચિન્હ, પુછીને કરજો ભિન્ન ભિન્ન;
પડશે પ્રભુપદની બહુ મજા, વલ્લભ દેખાડે છે કજા;
એક મત ઊભું ટીલું કરે, તેમાં ધોળાં છાપાં ભરે.
જો તેનો સમજ્યો હોય સાર, તો ધન્ય છે ટીલું કરનાર.
બીજું તીલક તે આકાર, કાળી ટપકી તળે લગાર.
તેનો શું સમજ્યો છે મમ, નવ સમજે તવ મીથ્યા ધર્મ
ત્રીજું ટીલું તેમ જ થાય, ગોળ ચાંલ્લો કરે વચમાંય.
સમજી કર્યું તો સેવક ખરો, સમજ્યા વણ ઢોંગીનો ધરો.
ચોથું ટીલક ચાંલ્લા ત્રણ, એક ધરમમાં એ આ વ્રણ.
સમજ્યા વણ પડવાની તડી, જેવી તમણ પર ડેઘો ચડી,
પાંચમું તીલક તેને મળે, વચમાં લીટી પડઘી તળે,
તેનો સઘળો સ્વતેજ રંગ, સમજ્યો તો સત્ય નહિ તો બંગ.
સાતમાને બે ઊભી શળી, નીચેથી વાંકી નહિ વળી.
કેમ કર્યો એવો આકાર, સમજ્યા વણ ધરમી ધીક્કાર.
અષ્ટમો મત તે ભસ્મ કપોળ, ના સમજ્યો ત્યાં લગી ડફોળ,
ભસ્મ ભેદ જો જાણે થોડો, તો જ ભસ્મ નહિ તો રાખોડો.
નવમું ટીલું સુખડ તણું, ભેંસો ભડકે તેવું ઘણું,
તે આડું લલાટે થાય, તેનો શો હશે મહમાય.
દસમું ચન્દ્રાકારે સ્વંત, કરનારો નહિ હોય અચેત,
જો કરનારો હોય અજાણ, તો તેને જાણો પાશાણ.
અગીયારમેં જોતીનું રૂપ, દીપકનો આકાર અનુપ,
કૈં રાતું કૈં ધોળું કરે, સમજ્યો હોય તો મુખ ઓચરે.
લંબ ગોળ ચાંલ્લો તેરમો, સૌ નારીનો દીઠો અમે,
તેમાં કૈં સેવી વૈષ્ણવી, કયા ધરમની સ્ત્રીઓ હતી.
તેરમી કંકુની અરચાય, વામ મારગી કૈ કેવાય,
અંબીકાના સેવક જેહ, અર્ચા ચરચાનો સંદેહ.
ચાંલ્લા એવા જગમાં ઘણા શોધન કરતા ન રહે મણા,
ધર્મે ધરમના જુદા ઘાટ, ફેરફાર કીધા શા માટે,
કૈંક કહે જાતી રિવાજ, કૈંક કહે નિશાની કાજ,
જુદો ઓળખાવો ધર્મ, કૈંક કહે મ્હોટો મર્મ.
મર્મ કહે છે તેનું ખરૂં, અણ સમજું કહે અરૂપરૂ,
અરૂપરૂ કે છે જે ઘણી, ખબર નથી તેને ધર્મ જ તણી.
જ્યમ તમ બોલી કરે મ્હોટાઈ, તેથી જ્ઞાને રે છોટાઈ.
જક ઝાલી ઝાકળીયું ઝુંડે, અજ્ઞાને ભવસાગર બુડે,
સૃષ્ટિમાં એક ધર્મને ઘણી, જુજવી રીત્ય કરી તે તણી,
સમજીને કર્યું હોય કામ, તો ઉત્તર આપો તમામ,
નહિ તો દેખા દેખી કર્યું, તેમાં કાર્ય કહો શું સર્યું?
વહે ગાડર સૌની સાથ, અંધ ગ્રહે અન્યો અન્ય હાય,
દેખા દેખી ચાલે જગત, તેમાં કીયો સાચો ભગત.
પોગળમાં શીદ કાઢો દન, જાઓ સમજ્યા ગુરુ ભોવન,
ધર્માચાર્યને પુછો એમ, આ ટીલડું કરાવ્યું કેમ?
શાથી કાઢ્યો આ આકાર, તેનો સૌ સમજાવો સાર,
નીર સંશય સમજાવો પેર, નહિ તો તમ ટીલું તમ ઘેર.
એમ કહી ટીલકનું જ્ઞાન, મેળવો તો રીજે ભગવાન,
સમજ્યા વિના ટીલક કરે, આવાગમન તે નહીં નીસ્તરે.
કારણ વણ કોઈ નવ કરે, શું નવરો ચિત્રો ચીતરે,
ના સમજ્યો તે ચિત્ર જ થયું, જીવતર એનું એળે ગયું.
ધરમ કેરો સમજવા સાર, શાણાને શબ્દોનો માર,
વચન ચાબકો વાગે અતિ, ચાનક લાગે સુધરે મતિ.
આપ ધરમમાં કાઢે શોધ, તેથી પામે ઉત્તમ બોધ,
બોધ મળે તવ મુક્તિ થાય, આવાગમન સર્વે વહી જાય,
નઠોર જીવ ગંધર્વની જાત, તેને ડફણા મારો સાત.
તે પણ તેને નાવે જ્ઞાન, તો શબ્દે ક્યાં આવે ભાન,
ભાન વિના ચોરાશી ફરે, જન્મ મૃત્યુ તે નવ વિસ્તરે.
શોધન કરવામાં નહીં ચિત્ત, તો શીદ ગ્રહી ધરમની રીત,
તિલક કરી દેખાડે ધર્મ, હરી છેતરવા બાંધે કર્મ.
તે જીવ જાશે જમને દ્વાર, નહિ તો શોધી કાઢે સાર,
સાર સમજીને તિલક કરો, શુભ પંથ સુખે સંચરો.

સુજ્ઞ સુપાત્રો કરજો કયાસ, નીર સંશય લેજો તપાસ,
ધરમ ધરમના છે નિશાન, એવું કહે છે કૈં અજ્ઞાન.
કારણ વણ કાર્ય નવ હોય, નહિ નહિ તો પણ કારણ જોય,
કંઠી ધારણ કીધી કંઠ, ફાવ્યો તેવો ઝાલ્યો પંથ.
મ્હો માયાનો લેતા અંત, મુક્યો નહિ વિષયનો તંત,
કંઠી કેરો બહુ પ્રકાર, તેનો શો કરવો વિચાર.
વિચારવું સમજવા સાર, સમજ્યા વણ વેઠવાનો ભાર,
સુખડના મણકાની એક, તુલશીની બીજી વિવેક,
ત્રીજી કંઠી દર્ભ જ તણી, દ્રો મણકાની ચોથી ગણી.
પાંચમી કંઠી છે રૂદ્રાક્ષ, છઠ્ઠી કંઠી તે ભદ્રાક્ષ,
સાતમી કંઠીના ઠુમરા, કૈં પરવારી કે છો ખરા.
આઠમી કંઠી સો વ્રણ તણી નવમી કંઠી સ્ફટીક મણી,
દસમી કંઠી નાડાછડી, અનેક એવી જગમાં પડી.
જો સહુનો હોય એક જ સાર, તો જુદા નવ હોય પ્રકાર,
સમજુ પ્રાણી કાઢો શોધ, ગુરુ પાસે જૈ લ્યો બોધ.
શીશ વિના ધડ પર ફાળીયું, સમજ્યા વણ કંઠી ગાળિયું,
જેમ ગાળીયું છે ઢોરને, વળી ગાળિયું છે ઢોરને,
તેમ ગાળિયું જાણો સહી, સમજ્યા વિના ખપનું નહીં.
નાહક વિંઢાળે છે ભાર, ન સમજે તે સુધ્ય ગુમાર.
ગુરુ સમીપ જાતા શી શર્મ, શર્મ ધરી તો નિશ્ફળ ધર્મ.
નિશ્ફળ જેણે ધરીયો ધર્મ, તે ક્યાંથી પામે પદ પર્મ
ઘર બેઠા મુક્તિ નવ થાય, ગુરુ સમીપે કેમ ન જાય.
શું ગુરુ જ્ઞાન દેતા નથી, કીયો જૈને મુઓ મથી,
ગુરુ પાસે જાવા ચ્હાય, તો તુને તે જ્ઞાન જ થાય.
ન કરતા હોય ગુરુ જ્ઞાન, તો ગુરુ માઈક મસ્તાન.
ઉપદેશ ગુરુ ન કરે કાંક, તો ગણીએ ગુરુનો વાંક.
પુછો ને ન કરે ઉપદેશ, તેને જ્ઞાન નહીં લવલેશ,
જો અરાડે અન્ય વિદ્વાન્, તો તે ગુરુ હોય અજ્ઞાન.
અજ્ઞાની નહીં ગુરુ તુલ્ય, ગુરુ કરે તે જનની ભૂલ,
ભૂલ ભરેલો ભકકૈ મરે, તે જીવ કો કાળે ન તરે.
તરવા જેને ઇચ્છા નથી, તે તેવું મુખ બોલે કથી,
કરતા હો તે કરીયે સદા, બીજા તો બહુ નાંખે ગદા.

એવા ક્યાંથી નવરે છૈયે, ગુરુ પાસે પુછવા જૈયે,
જુઓ લોક એ કપટી ભગત, ધરમ ઢોંગથી ધુત્યું જગત.
એ ક્યાં કરીયે મૂકી ધંધો, એવું બોલે હૈયા અંધો.
અંધાને કામ લક્ષમી તણું, ધરમ જ્ઞાન નવ ચાહ્યે ક્ષણું.
લક્ષમી ચાહ્ય હરીના ચરણ, ત્યાં નહીં મૂંઢનું અંતઃકરણ.
તે મૂંઢ ભવ સાગર ન તરે, લક્ષ ચોરાશી અવતાર ધરે,
તે મૂંઢ ભવ સાગર ન તરે, લક્ષ ચોરાશી અવતાર ધરે.
અનેક જીવનો બેટો થાય, ફરે પશુ પક્ષણીયો માય,
જો ગુરુની પાસે જાય તો જન્મ મૃત્યુ પળાય.
જો ગુરુ કરે નહીં બોધ, સાચો સમજાવે નહીં શોધ,
તે ગુરુ કરવો ન કદી, વાત ઉડાવે વાંકુ વદી.
તે તો ગુરુ ધનનો ધણી, ભગતે ન જોવું તેના ભણી,
અજ્ઞાની ગુરુની બાંય, ન ઝાલવી ન લેવી છાંય.
આભડ્યો અભડાવે છે જેમ, અગનાને અગનાની તેમ.
જેને જેવો લાગે સંગ, તેને તેવો બેસે રંગ.
ધન હરનારા ગુરુ જેહ, પરસાદી પોંચાડે તેહ.
કાં ગવરાવે લીલા ગાન, કાં દેખાડે વૈભવ માન.
કાં કહે લે હરીનું નામ, બીજું ત્રીજું શું છે કામ.
માંડી વાળે કહીને એમ, તેની સંગત કરીએ કેમ.
કેમ કરે ન સત્ય ઉપદેશ, શું મીથ્યા ધરે ગુરુ વેશ.
કેડો નહીં લીધો કો ભગત, તેથી બુડ્યું આખું જગત.
તેમ ગુરુએ બોધ ન કર્યો, હરી ફરીને ભંડાર ભર્યો.
મીડક પુર્યા વાડા મહીં, બહાર નિકળવા પામે નહીં.
તેમ પુરાઈ રહ્યા મનુષ, આગળ વધવાની નહીં હુંશ,
કહે એક ગુરુ એક બાપ, બીજો કરવામાં બહુ પાપ.
એવું સમજે હૈયા ફૂટ, કહેશે એ ક્યાં કરીએ કુટ.
દત્તાત્રીયે ચોવીશ કર્યા, શું તે ચોવી બાપ જ ઠર્યા.
એક બાપનો બેટો હોય, તેનું મ્હોં નવ જોશો કોય,
બાધ કરવો ગુરુનું કામ, ન જાય સુણવા તેને ડામ.
માટે સરવે જીવ સંચરો, ગુરુની પરણીપત કરો,
હર પ્રકારે મેળવો જ્ઞાન, લક્ષ ચોરાશી ટાળો વાન.

વધુ આવતા અંકે

મહર્ષિ દયાનન્દજીની પવિત્ર જન્મભૂમિ ટંકારામાં આપના નામને કાયમી યશ મળે તેવી યોજના

આપ નીચેની કોઈપણ એક અથવા વધારે યોજનામાં, યોજના દીઠ રૂ. ૧૧૦૦૦-૦૦ (અગિયાર હજાર) રૂપિયાનો ફાળો આપી યશના ભાગી બની શકો છો

(૧) ભોજન સેવા તિથિ, (૨) યજ્ઞ સેવા તિથિ, (૩) ગૌ-સેવા તિથિ, (૪) ઔષધ સેવા તિથિ

આ માટે કોઈ એક અથવા વધારે યોજના મુજબ પ્રત્યેક યોજના માટે અગિયાર હજાર રૂપિયા દાનામાં આપો. આપ આપના પરિવારના જે તે સદસ્યની જે તે તિથિ (જન્મ, વિવાહ અથવા પુણ્ય તિથિ) લખાવશો તે તિથિએ આપના તરફથી સેવા થશે. સંસ્થામાં બોર્ડ પર નામ લખવામાં આવશે. તિથિ અગાઉં આપને જાણ કરવામાં આવશે.

આશા છે કે તિથિ દાન આપીને દયાનન્દજીની પવિત્ર જન્મભૂમિ ટંકારામાં આપનું નામ કાયમી રીતે યશસ્વી કરવાની આ અમુલ્ય તકનો લાભ ચોક્કસ ઉઠાવશો.

સમ્પર્ક કરોઃ- શ્રી મહર્ષિ દયાનન્દ સરસ્વતી સ્મારક ટ્રસ્ટ, દ્વારા - આર્યસમાજ અનારકલી, મન્દિર માર્ગ, નવી દિલ્હી ૧૧૦૦૧૧,

ફોનઃ- ૦૧૧-૨૩૩૬૦૦૫૯, ૨૩૩૬૨૧૧૦

समाचार दर्पण

टंकारा ट्रस्ट के सौजन्य से
सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का 13वां राष्ट्रीय शिविर सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट–टंकारा अपनी नियमित गतिविधियाँ उपदेशक महाविद्यालय, गौ–शाला, जन्मगृह प्रबन्ध, अतिथि शाला आदि संचालित कर रहा है, उपरांत समय–समय पर विशेष आयोजन भी करता है। जिनमें मेडिकल कैम्प, विद्यार्थी प्रतियोगिताएं एवं सहाय आदि सेवा कार्य भी शामिल हैं। इसी क्रम में दिनांक 1 से 8 जून 2014 तक सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का 13वां राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर ट्रस्ट परिसर में लगाया गया। जिसमें शिविरार्थिनी और शिक्षिका–व्यवस्थापिकाएं कुल मिलाकर 100 की संख्या में उपस्थित रहीं। जिनके आवास एवं भोजन की उत्तम व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से की गई।

शिविर में गुजरात के विभिन्न स्थानों से उपरांत दिल्ली से भी बहनें प्रशिक्षण लेने शामिल हुई। शिविर की दिनचर्या प्रातः 4.30 से रात्रि 10.00 तक अनुशासित ढंग से संचालित की गई। जिसमें शिविरार्थियों को सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्यनमस्कार, भूमिनमस्कार, आसन, लाठी, छूरी, रायफल शूटिंग, नियुद्धम, सैनिक शिक्षा, बौद्धिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा आदि का प्रशिक्षण दिया गया। सार्वदेशिक वीरांगना दल की प्रधान संचालिका साध्वी उत्तमा यति जी के नेतृत्व में व्यायाम शिक्षक सत्यम जी व अभिलाषा जी (जयपुर से) एवं कु. नेहा व कु. ऋतांशी (नई दिल्ली से) प्रशिक्षण देने उपस्थित रहें। अतिथि प्रशिक्षक के रूप में प्रा. भावेश जेतपरिया ने मनोविज्ञान व डॉ. जयंतिलाल जीवाणी ने आरोग्य विज्ञान का प्रशिक्षण दिया। शिविर का उद्घाटन प्रा. दयालमुनि आर्य (वेदों के गुजराती भाषांतरकर्ता) ने ध्वज फहराकर किया। दीक्षांत समारोह राजकोट के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री जयदेव जी आर्य की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। जिसके मुख्य अतिथि श्री

आ. प्र. सभा के प्रधान श्री रणजित सिंह परमार टंकारा गुरुकुल के आचार्य श्री रामदेव जी एवम् संचालिका साध्वी उत्तमायति जी।

रणजितसिंह परमार (उपप्रधान गुजरात राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा) थे। दीक्षांत समारोह में जामनगर, राजकोट, गोंडल, गांधीधाम, वडोदरा, सुरेन्द्रनगर, मोरबी आदि स्थानों से आर्यसमाज के पदाधिकारी व टंकारा के सरपंच धर्मेन्द्र त्रिवेद व स्थानीय जन शामिल हुए और बच्चियों को प्रोत्साहित किया। समापन कार्यक्रम में लगभग डेढ़ घण्टे तक बच्चियों ने अपनें करतब दिखायें और दर्शकों की प्रशंसा की हकदार बनीं। इस अवसर पर विभिन्न विषयों में प्रथम व द्वितीय स्थान प्राप्त वीरांगनाओं को प्रमाणपत्र व पुरस्कार दिये गये। आचार्य रामदेव शास्त्री व ट्रस्ट के अन्य कर्मयोगियों ने शिविर व्यवस्था सम्भाली। शिविर का संयोजन हसमुख परमार ने किया।

शिविर में समापन समारोह के अवसर पर अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करती बालिकाएं।

श्री ओंकार नाथ महिला सिलाई केन्द्र टंकारा

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के अन्तर्गत पिछले कई वर्षों से श्री ओंकार नाथ महिला सिलाई केन्द्र निरन्तर सेवा कार्य कर रहा है। अपने प्राथमिक वर्षों में एक कमरे से प्रारंभ किये जाने वाले इस प्रकल्प ने प्रगति कर इसे चार कमरों तक फैला लिया है और गुजरात राज्य के राजस्तरीय परीक्षण केन्द्र से मान्यता प्राप्त भी कर ली।

आपकी जानकारी के लिए यहां महिलाओं/बालिकाओं को सिलाई, कढ़ाई का कार्य तो सिखाया ही जाता है साथ ही इस क्षेत्र में अध्यापिकाएं भी प्रशिक्षित की जाती हैं। वे भी राज्य स्तर पर मान्यता प्राप्त हैं।

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि टंकारा एवम् उसके निकटवर्ती क्षेत्र में जितने भी सिलाई केन्द्र हैं उन सभी का वार्षिक परीक्षा केन्द्र भी हमारा यह सिलाई केन्द्र ही है।

इस वर्ष इसमें एक नया पाठ्यक्रम प्रारंभ किया जा रहा है परिधान प्रारूप (Dress Designing)। जिससे हमारी प्रशिक्षित बालिकाओं को स्वरोजगार के अधिक अवसर प्राप्त होंगे। इस केन्द्र से लगभग 600 बालिकाएं प्रशिक्षित होकर जा चुकी हैं और सभी के लिए यह प्रशिक्षण अधिक आय का स्रोत बना है। यहां बिना किसी भेद–भाव के सभी बालिकाओं को प्रशिक्षण दिया जाता है।

टंकारा में छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधिमंडल

आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधिमंडल जिसमें 70 व्यक्ति अपने विस्तृत भ्रमण कार्य में ऋषि जन्म भूमि टंकारा पधारे। एक रात्रि वे टंकारा ट्रस्ट के आतिथ्य में रहे। रात्रि यज्ञ में सम्मिलित एवम् रात्रि भोजन ग्रहण प्रात: कालीन यज्ञ में टंकारा ट्रस्ट की ओर से सभी गणमान्य प्रतिनिधियों का स्वागत एवं अभिनन्दन किया गया। प्रात:राश के उपरान्त सभी ने प्रस्थान किया। वे टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों हेतु एक अच्छी राशि दान स्वरूप दे गए।

टंकारा में आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात चिंतन शिविर आयोजित

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा में गुजरात आ. प्र. सभा ने टंकारा गुरुकुल परिसर में आध्यात्मिक,सैद्धान्तिक और संगठनात्मक चिंतन शिविर का आयोजन 20-21 जून 2014 में हुआ। शिविर में विद्वान आाचार्य राम स्वरूप जी, आचार्य सत्यजित जी (रोजड) तथा टंकारा गुरुकुल के आचार्य रामदेव जी विभिन्न विषयों पर अपने विचार रखकर शिविरार्थियों का मार्गदर्शन किया। सहयोग में दर्शन योग विद्यालय के ब्रह्मचारीगण थे। तदोपरान्त सार्व. आ. प्र. सभा के विद्वान् उपमन्त्री श्री प्रकाश जी, गुज. प्रा.आ. प्र. सभा के तथा आर्यसमाज अहमदाबाद के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, जीवन प्रभात आश्रम के महामन्त्री श्री वाचोनिधि जी, जामनगर से डा. अविनाश भट्ट तथा श्री राणा जी, वडोदरा से आर्यश्रेष्ठी श्री रतनशीभाई वेलाणी आदि भी मार्दगर्शक के रूप में उपस्थित रहे। शिविर का संचालन गुज. सभा के मन्त्री श्री हसमुखभाई परमार ने किया। शिविर का समापन 22 जून 2014 को गुरुकुल की यज्ञशाला में हुआ। यज्ञ के पश्चात् टंकारा ट्रस्ट की ओर से आचार्य रामदेव जी, उपाचार्य नवानन्द जी, सिलाई केन्द्र की संयोजिका राज लुथरा जी, रमेश मेहता, तथा विद्यार्थिओ ने उपस्थित विद्वानों, विशेष महानुभावों तथा शिविरार्थियों का शाल आदि ओढ़ाकर सम्मान किया।

यदि आप गुस्से के एक क्षण में धैर्य रखते हैं, तो आप दु:ख के सौ दिन से बच सकते हैं।

आर्यवीर दल गुजरात का प्रशिक्षण शिविर

गुजरात में आर्यवीर दल के विकास के लिए वर्ष में दो बार शीत व ग्रीष्म कालीन प्रांतीय कक्षा के शिविर लगाये जाते हैं। विभिन्न आर्य संस्थाएं शिविरार्थियों के भोजन-आवास की व्यवस्था कर इस संगठन को अपना सहयोग प्रदान करती है। अत: प्रतिवर्ष गुजरात के विभिन्न स्थानों पर शिविरों का आयोजन होता हैं। इस वर्ष का ग्रीष्म कालीन शिविर संत ओधराम वैदिक गुरुकुल-भवानीपुर (कच्छ) में लगाया गया। जिसमें गुजरात के विभिन्न स्थानों से 125 आर्यवीर शामिल हुए। आर्यवीरों को आर्यवीर श्रेणी व शाखानायक श्रेणी का पाठ्यक्रम पढ़ाया गया, जिसे शारीरिक, बौद्धिक व चारित्रिक विषयों को निपुण शिक्षकों ने चलाया। प्रात: 4:30 से रात्रि 9:30 तक की निश्चित दिनचर्या में चले इस शिविर में आर्यवीरों ने पूरे मनोयोग से प्रशिक्षण ग्रहण किया। शिविर का समापन कार्यक्रम महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी शिष्य पं. श्यामजी कृष्णवर्मा के स्मारक (क्रान्तितीर्थ) मांडवी में आयोजित किया गया। जिसें सफल बनाने के लिए गुजरात की विभिन्न आर्यसमाजों से व मुम्बई, पूना, जलगाव आदि स्थानों से भी आर्यजन बड़ी भारी संख्या में पधारें व आर्यवीरों का उत्साहवर्धन किया। पूर्णाहूति कार्यक्रम के पथ संचलन (मार्च पास्ट) का सैनिक अभिवादन (सलामी) गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी ने ली। आर्यवीरों को प्रमाणपत्र व पुरस्कार बांटे गए। शिविर में मुख्य शिक्षक ब्र. अरूणकुमार रहे। अन्य शिक्षकों ने अपना सहयोग दिया। शिविराध्यक्ष गुरुकुल के आचार्य स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती थे। शिविर का संचालन हसमुख परमार ने किया।

वैदिक वीरांगना दल

वैदिक वीरांगना दल, जयपुर के द्वारा कृण्वंतो विश्वमार्यम के लक्ष्य को रखते हुए एक महिला धर्म सभा व भजन प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया जिसमें शहर के सभी वर्ग की महिलाओं तथा आर्य समाजों की बहनों जिनमें सरोज कालरा, डॉ. सुमित्रा आर्या, सरोज अग्रवाल, निर्मला, वेद साहनी, उषा चांदना, ब्रह्मा मित्तल, कमलेश कुच्छल, शकुन्तला छत्रपाल, पुष्पा नारंग, शशि दीवान आदि महिलाओं ने भाग लिया। यह कार्यक्रम संस्था के कार्यालय बी-123, मालवीय नगर, जयपुर में रखा गया तथा इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती दुर्गा शर्मा द्वारा किया गया। संस्था की अध्यक्षा कुमारी अनामिका शर्मा ने बताया कि वैदिक धर्म के प्रचार के लिए गठित यह संस्था आगे भी अनेक कार्यक्रम करती रहेगी। इस कार्यक्रम में लगभग 100 महिलाओं ने भाग लिया और वैदिक धर्म के भजन व चिन्तन के साथ शान्ति पाठ किया गया। वैदिक जय घोष के साथ कृण्वंतो विश्वमार्यम् के लक्ष्य के साथ यह कार्यक्रम समाप्त किया गया।

संस्कृति सरंक्षण का दायित्व युवाओं पर

संस्कृति के संरक्षण का दायित्व युवाओं पर ही है जिस देश के युवा जागृत रहते हैं उस देश का धर्म, संस्कृति सदा अक्षुण्ण बनी रहती है। यह बात वैदिक विद्वान आचार्य अग्निमित्र शास्त्री ने **हाड़ौती राठौर समाज छात्रावास दादाबाड़ी कोटा में आर्यसमाज द्वारा आयोजित वैदिक संस्कार** एवं सत्संग कार्यक्रम में कही। महर्षि दयानन्द वेदप्रचार समिति कोटा के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि नारी सशक्तिकरण, अंधविश्वास को दूर करने तथा जाति के बंधनों से मुक्तकर समाज को आगे लाने में आर्य समाज ने महत्वपूर्ण कार्य किया गया।

पुस्तक समीक्षा

<u>नये आकाश की तलाश पुस्तक</u> को लिखने का यही उद्देश्य है कि समय का सदुपयोग हो, परिवार, समाज व देश की उन्नति हो, मनुष्य जाति आगे बढ़ने की होड़ में अपने नैतिक कर्तव्य से न हटे, अभाव की ओट में आलसी बनकर न बैठें, जीवन उन्नति का कारण बने, जीवन में सन्तोष हो, परस्पर भाईचारा हो, माता-पिता एवं आचार्यों का सम्मान हो, आयु वृद्धों एवं ज्ञान वृद्धों के आशीष की चाह हो।

इस पुस्तक में कुछ विचारकों एवं समाज सुधारकों के जीवन को प्रस्तुत करने में कुछ लेखकों के विचार भी संकलित किये हैं।

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान प्रभावी वक्ता एवं कुशल लेखक डॉ. सूर्यदेव शास्त्री कृत ''नये आकाश की तलाश'' नैतिक मूल्यों पर आधारित पुस्तक उपलब्ध है।

पुस्तक प्राप्ति स्थानः-

1. गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क दिल्ली, फोन-011-65360255
2. अमर स्वामी प्रकाशन विभाग, 1058 विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद, मो. 9910336715
3. दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, वैदिक प्रकाशन 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 011-23488800
4. आर्य प्रकाशन 814 कुण्डेवालान अजमेरी गेट, दिल्ली-9868244958

चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन

आर्य युवा समाज के तत्वावधान में **डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल सैक्टर 49 फरीदाबाद** में त्यागमूर्ति शिक्षाविद महात्मा हंसराज के 150 वें जन्म दिवस को बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। इस दिन को विद्यालय में चरित्र निर्माण दिवस के रूप में मनाया गया है। इस अवसर पर प्रातः विद्यालय में यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें अभिभावकों को भी आमंत्रित किया गया था। तत्पश्चात छात्रों के चारित्रिक विकास के लिए चरित्र निर्माण दिवस का आयोजन किया गया था। जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में आर्य समाज की प्रसिद्ध विदुषी सविता आर्या एवं भजनोपदेशक श्री बच्चू सिंह जी को आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता फरीदाबाद के प्रसिद्ध आर्य नेता डॉ. सत्यदेव जी ने की थी। कार्यक्रम का प्रारम्भ विद्यालयों के छात्रों द्वारा ईश प्रार्थना के साथ हुआ।

शतायु श्री नर्मदाबाई आंजना का निधन

वैदिक सिद्धांतों के कर्मठ अनुयायी श्री शिवसिंह जी आंजना निवासी मूंजाखेड़ी की मातुश्री स्व. नर्मदाबाई जिसने अपने जीवन के सुखद 107 (एक सौ सात वर्ष) पूर्ण कर सामान्य रोग को अंगीकार कर मृत्यु को वरण कर अपने जीवन को सार्थक बना दिया।

उन्होंने अपने जीवन काल में कठोर परिश्रम के साथ परिवार को आदर्श स्वरूप बनाने का प्रयास करती रही। माताश्री की अंतिम अभिलाषा यह थी कि उनका अंतिम संस्कार वैदिक पद्धति से किया जावें। उनकी इच्छानुसार अंतिम संस्कार की प्रक्रिया आर्य समाज नागदा एवं महिदपुर के मूर्धन्य विद्वानों द्वारा सम्पन्न की गई। सम्पूर्ण अंतिम संस्कार का निर्देशन आर्य समाज नागदा के प्रधान व स्थानीय आर्य समाज संस्था के अध्यक्ष डॉ. श्री मनोहरलाल सोनी ने किया।

चरित्र निर्माण एवं व्यायाम शिविर

<u>आर्य वीर दल, सोनीपत</u> तथा जिला वेद प्रचार मण्डल, सोनीपत की ओर से वैदिक ज्ञान योग महाविद्यालय (गुरुकुल) ग्राम जुंआ (सोनीपत) में उदीयमान युवाओं के लिए चरित्र निर्माण एवं व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। गुरुकुल के आचार्य वेदनिष्ठ जी की व्यवस्था में इस शिविर में 6वीं से 12वीं कक्षा आयु वर्ग के 85 विद्यार्थियों को हरिद्वार से स्वामी केवलानन्द जी द्वारा जहां योग प्रशिक्षण प्रदान किया गया वहां आर्यवीर शिक्षक श्री जसवीर आर्य तथा रोहित आर्य द्वारा अनुशासन, नैतिक शिक्षा, आसन, व्यायाम आदि का प्रशिक्षण दिया गया। समापन के अवसर पर उदीयमान युवाओं ने व्यायाम, आसनों का प्रदर्शन भी किया। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा से पधारे आचार्य अभय कुण्डू, आचार्य वेद निष्ठ जी, आचार्य संदीप जी के प्रेरक प्रवचनों तथा आर्यवीरों के मनोहर भजनों ने जनसमूह को आकर्षित किया।

वार्षिकोत्सव

<u>आर्य समाज नरेला दिल्ली-40</u> का 83वां वार्षिकोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया। जिसमें प्रातः प्रभात फेरी निकाली गई तथा सायं को महिला सम्मेलन हुआ। मुख्य सम्मेलन में ब्रह्मचारी राज सिंह (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली) व वरिष्ठ उपप्रधान श्री धर्मपाल आर्य के ओजस्वी प्रवचन हुए, जिनका श्रोताओं पर विशेष प्रभाव पड़ा।

समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. उदित राज, सांसद उ.प्र.दिल्ली, श्री नीलदमन खत्री विधायक नरेला क्षेत्र, श्री मोहन भारद्वाज (अध्यक्ष निगम स्थाई समिति, श्री केशरानी खन्नी, निगम पार्षद नरेला, प्रसिद्ध गौ भक्त एवं समाज सेवक श्री राजेन्द्र सिंघल एवं आर्य समाज नरेला के सरंक्षक चौ. संतोष कुमार रहे।

डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया सम्मानित

<u>अग्निहोत्र धर्मार्थ ट्रस्ट द्वारा</u> 11वें स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस के अवसर पर सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, प्रख्यात साहित्यकार एवं भावनगर विश्वविद्यालय भावनगर (गुजरात) के पूर्व प्रोफेसर एवं हिन्दी-विभागाध्यक्ष डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया (दिल्ली-निवासी) को 'वेदश्री सम्मान' से विभूषित किया गया। आर्यजनों से खचाखच भरे सभागार में मोतियों की माला, शाल, प्रशस्ति-पत्र युक्त महर्षि दयानन्द का चित्र, प्रतीक-चिह्न, ग्यारह हजार रूपये की सम्मान-राशि का चेक एवं ग्रंथादि स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती, श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री वेदप्रकाश गुप्ता, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा आदि ने समवेत रूप से डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया को भेंट कर उनका अभिनन्दन किया।

गुरुदत्त विधार्थी जन्म दिवस आयोजित

<u>आर्य समाज रामनगर, रूड़की,</u> जनपद हरिद्वार, राज्य-उत्तराखण्ड के तत्वावधान में राष्ट्र एवं विश्व स्तर के वेदों के महान विद्वान, वैदिक साहित्य व लेखक व पत्र पत्रिकाओं के रचयिता मान्य श्री पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म दिवस को आर्य समाज के प्रांगण में विशेष रूप से महायज्ञ किया गया। इस यज्ञ के ब्रह्मा श्री रामेश्वर प्रसाद सैनी रहे।

इस कार्यक्रम के मुख्य संयोजक तेजपाल सिंह आर्य ने विशेष रूप से उनके जीवन चरित्र एवं उनकी विशेष योग्यता पर विस्तार रूप से प्रकाश डाला।

आर्य समाज का भविष्य कैसे उज्जवल हो?

आर्य समाज एक प्रगतिशील तथा क्रांतिकारी संस्था है। इसकी स्थापना का एक सौ चालीसवां वर्ष 31 मार्च 2014 को देश विदेश की सभी आर्य समाजों में मनाया गया। अल्पकाल में इस संस्था ने बड़ी उन्नति की है। हमारे देश के लगभग सभी प्रदेशों तथा अनेक अन्य देशों में भी इसकी स्थापना हो चुकी है। एक अनुमान के अनुसार लगभग सात हजार आर्य समाज मन्दिर इस समय कार्यरत हैं। आर्य समाजों के अतिरिक्त एक हजार के लगभग डी.ए.वी. तथा आर्य स्कूल कॉलेज अनेक लड़के लड़कियों के गुरुकुल शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत हैं जिन में विद्यार्थियों को नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा देने का भी प्रावधान है।

आर्य समाज वेदों को ईश्वरीय ज्ञान के ग्रंथ मानता है इसलिए मुख्य कार्य वेद प्रचार करना है। मनुष्यों में स्वभाविक ज्ञान नहीं होता इसलिए ईश्वर से सृष्टि के आदि में चार ऋषियों द्वारा वेदों का ज्ञान दिया था। चार वेद संसार के सबसे पुराने ग्रंथ हैं जो सब मनुष्यों के लिए हितकारी हैं। इस युग में महर्षि दयानन्द ने वेदों का पुनः उद्धार किया जबकि वेद तो लुप्त ही हो गये थे और पौराणिक पंडित कह रहे थे कि शंखासुर राक्षस वेदों को चुरा कर ले गया है। इसलिए वेदों की बजाय भागवत आदि अठारह पुराणों का प्रचार हो रहा था जिनमें पाखंड तथा अंध विश्वासों की प्रमुख रूप से शिक्षा दी जा रही थी जिस से सारा देश सत्य सनातन धर्म को भुला चुका था तथा अपने प्राचीन आर्य नाम को भी भुला दिया था। हमारी हालत इतनी बिगड़ी कि आर्य के स्थान पर हम हिन्दु कहलाने लगे तथा देश का नाम भी हिन्दुस्तान हो गया।

महर्षि दयानन्द ने अपने पुरुषार्थ से चारों वेद ढूंढ निकाले और इनका हिन्दी भाषा में अनुवाद करना शुरु किया तथा सबसे पहले ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका ग्रंथ लिखा जिसमें बताया गया कि वेदों में कौन–कौन सी विद्यायें हैं। इससे भारत तथा यूरोप के विद्वान वेदों के प्रशंसक बन गये। आर्य समाज के विद्वानों ने सबमतों के लोगों से शास्त्रार्थ किये जिनसे वेदों का खूब प्रचार प्रसार होने लगा जिससे लाखों लोग आर्य समाजी बने। वेदों में स्पष्ट तौर पर यह कहा गया था कि ईश्वर निराकार है और काया रहित है (यजुर्वेद 40.8) तथा उसकी कोई मूर्ति नहीं है (यजुर्वेद 32.3)

1947 से देश के विभाजन से आर्य समाज की बड़ी हानि हुई। पाकिस्तान से भारत आकर शरणार्थी लोगों ने नई आर्य समाजी तो बना लीं और सारे प्रदेशों में फैल गये परन्तु उसके बाद वेद का प्रचार धीमा पड़ गया जिससे पाखंड और अंधविश्वास बढ़ने लगा और आर्य समाजों के अधिकारी तथा विद्वान वेद उपदेश करने से डरने लगे ताकि लोग नाराज न हो जायें। इस तरह साप्ताहिक सत्संगों में हाजरी घटती जा रही है। नये सदस्य बन नहीं रहे और पुराने दिवंगत होते जा रहे हैं। इस तरह आर्य समाज कहां तक चलेगा। आज आर्य समाज केवल हवन यज्ञों तक ही सीमित होता जा रहा है। महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज मुलतान के मन्त्री या मा. दया राम वर्मा को 31 दिसम्बर 1880 को पत्र लिखा था कि आर्य समाज के लोग जनगणना में धर्म के खाने में वैदिक धर्म और जाति आर्य लिखायें परन्तु आर्य नेताओं ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। इसलिए सब अपने को हिन्दू ही लिखाते रहे हैं। इसलिए हमारे अधिकांश परिवार आर्य नहीं बने जिससे आर्य समाजियों की संख्या कम होती जा रही है। किसी धर्म अथवा मत के मानने वाले लोग अपने 2 धर्म के बड़े पक्के होते हैं इसलिए सब प्रार्थी को अपना धर्म वैदिक ही लिखना लिखाना चाहिए।

आर्य समाज को अब मन्दिर कहा जाता है इसलिए सब आर्य समाजों में प्रतिदिन प्रातः सायं सन्ध्या तथा सत्संग और योगाभ्यास होना चाहिए। हवन चाहे एक ही समय केवल 16 आहुति का करें। इस समय टी.वी. चैनल प्रचार के बड़े साधन हैं इसलिए किसी टी.वी. चैनल पर प्रतिदिन कम से कम एक घन्टा वेद प्रचार का कार्यक्रम होना चाहिए। आर्य समाज की प्रतिनिधि सभायें वेद प्रचार की ओर विशेष ध्यान दें तभी जनता आर्य समाज से जुड़ेगी। छठे नियमानुसार संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है यह नहीं भूलना चाहिए। देश में भूचाल, बाढ़ इत्यादि प्राकृतिक विपत्तियों के समय आर्य समाज लोगों की सहायता के लिए हमेशा अग्रणी रहता था परन्तु अब ऐसा नहीं रहा। आर्य समाज को समाज उद्धार तथा देश उद्धार के कार्यों के लिए भी आन्दोलन करते रहना चाहिए तभी यह जीवित रहेगा। अन्यथा राजाराम मोहन के ब्रह्म समाज की तरह कहीं यही भी शीघ्र ही काल का ग्रास न बन जाये। यह ध्यान रखना चाहिए। इसलिए सब प्रदेशों की आर्य प्रतिनिधि समाजों को जागरूक होकर आर्य समाज का प्रचार करना चाहिए। उड़ीसा के स्वामी धर्मानन्द जी ने 200 परिवारों को वैदिक धर्म की दीक्षा दी है। सब सन्यासी तथा विद्वानों को अपने अपने क्षेत्र में परिवारों को ऐसी दी जानी तभी वैदिक धर्म अस्तित्व में आयेगा। हमारे परिवारों के वैदिक धर्मी बनने से ही आर्य समाज की उन्नति होगी और इसका भविष्य उज्जवल होगा। स्वामी रामदेव एक आर्य सन्यासी हैं जिन्होंने योग का संसार भर में प्रचार किया है। आर्य समाज के नेताओं को उन्हें यह परामर्श देना चाहिए कि वह किसी की आलोचना चाहे न करें परन्तु स्वयं वैदिक सिद्धान्तों का पालन करें तथा मूर्ति पूजा इत्यादि से दूर रहें। वह भारत स्वभिमान ट्रस्ट द्वारा देश के उद्धार में लगे हैं। आर्य समाज को इसमें उनका साथ देना चाहिए तभी देश की राजनीति में सुधार होगा और भारत जगत गुरु बनेगा। धन्यवाद यह प्रसन्नता की बात है कि उन्होंने भ्रष्टाचारी शासन समाप्त करके श्री नरेन्द्र मोदी को प्रधानमन्त्री बनवाने में सहयोग दिया है।

आर्य समाज का सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा आज टुकड़े टुकड़े हो चुका है इसलिए उपनियमानुसार इस सभा का चुनाव करवाना आवश्यक है। प्रदेशों की जो प्रतिनिधि सभायें पुरानी रजिस्टर्ड हैं केवल उन्हें ही वोट का अधिकार होना चाहिए। अन्य वोगस सभाओं को नहीं। कोई ऐसा व्यक्ति प्रधान बने जो वैदिक सिद्धान्तनुसार आचरण वाला हो। इन सुझावों पर अमल करने से ही आर्यसमाज का भविष्य उज्जवल होगा।

– अश्विनी कुमार पाठक, सी 233, नानक पुरा, नई दिल्ली–21, फोन– 26871636

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में

आवश्यकता

❑ कक्षा 8, 9 एवं 10 में हरियाणा प्रान्त के पाठ्यक्रम से गणित एवं विज्ञान पढ़ाने की क्षमता रखने वाले योग्य अध्यापक की आवश्यकता है।

❑ हरियाणा प्रान्त के पाठ्यक्रम से अथवा गुरुकुलीय पाठ्यक्रम से अंग्रेजी पढ़ाने वाले योग्य अध्यापक की आवश्यकता है।

सम्पर्क करे:–**आचार्य रामदेव जी**

डाकः– टंकारा, जि. मोरबी, पिन. 363650 (गुजरात)

(पृष्ठ 1 का शेष)

जाए तो वे भी सफलता का स्वाद रखने लगते हैं और बाद में कक्षा में प्रथम स्थान भी पाने में समर्थ हो जाते हैं। असफल होने वाले विद्यार्थियों के मन में हमेशा यह बात घर किये रहती है कि हम तो कमजोर है, जन्मजात कमजोर हैं, हम कभी आगे नहीं निकल सकते, मगर ऐसा नहीं है। माता-पिता और अध्यापक की थोड़ी सी कोशिश उनकी दिशा बदल देती है-बच्चों के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन होता देखा जाता है, अध्यापक बच्चों को पढ़ाने के साथ उनमें नई ऊर्जा का संचार भी करता है, जिससे वे भी पढ़ने के प्रति आशावादी एवं परिणामवाद हो जाते हैं।

महापुरुषों के जीवन परक कथानकों, प्रसंगों एवं जीवनियों से व्यक्ति उत्साहित होते हैं, नवस्फूर्ति का संचार होता है, कुछ नया करने का मन में भाव उत्पन्न होता है-ऐसे में व्यक्ति उचित अवसर की तलाश भी करता है और बहुश: देखा जाता है व्यक्ति की सफलता के पीछे उसकी जागरूकता कार्य करती है, ठीक समय आते ही उस कार्य में प्रवृत्त हो जाना, अपनी दिशा को समझ लेना, ऐसा नहीं है कि व्यक्ति के जीवन में अवसर नहीं आते-बल्कि यदि इसे यूँ समझ लें कि हर व्यक्ति के जीवन में अवसर आते हैं और अनेक बार आते हैं, बस आवश्यकता है उन्हें पहचानने की। जो व्यक्ति अवसर मिलने पर उसे नहीं पहचानते वे लोग प्राय: निराशा भरा जीवन ही बिताने को मजबूर रहते हैं, ऐसे में नकारात्मक ऊर्जा का सृजन होने लगता है, सारी ताकत नकारात्मक सोच में व्यय हो जाती है-जीवन में अकर्मण्यता बनी रहती है-ऐसे में उन्नति का शिखर कैसे प्राप्त हो? एक ऐसा उदाहरण पढ़ने को मिलता है-जिसे हम कह सकते हैं कि निरन्तर प्रयत्न से व्यक्ति बहुत आगे बढ़ जाता है।

''ज़िलेट'' आज एक ऐसा नाम है जिसे विश्वभर में जाना पहचाना सा अनुभव किया जा सकता है। प्रतिदिन काम में आने वाले 'ब्लेड' का निर्माण 'ज़िलेट' नाम के व्यक्ति ने किया था। 'ज़िलेट' की शिक्षा बहुत कम थी, यूँ समझ लीजिए कि जीवन के अधिकांश काल में ज़िलेट ने मजदूरी का कार्य किया। लेकिन ज़िलेट के मन में हमेशा अपना काम कुशलता से करने का रहता था, वह हमेशा सोचता रहता था कि मैं जो भी कार्य करूँ उसमें किसी प्रकार की कमी न रहने दूँ और मैं कौन सा काम करुँ जिससे मुझे असफल न होना पड़े। पैसे भी नहीं थे, इसलिए एक ऐसे साथी की तलाश भी थी जो कि पैसे की व्यवस्था कर सके।

एक-एक करके दिन बीतते जा रहे थे, आयु बढ़ती जा रही थी, एक दिन ज़िलेट चुपचाप बैठा हुआ था कि एक मित्र उससे मिलने के लिए आ गया, मित्र ने देखा कि ज़िलेट चुपचाप आँख बंद करके बैठा है और चिन्तित दिखाई दे रहा है, मित्र ने चिन्ता का कारण पूछा-तो ज़िलेट ने बताया कि मैं एक नया काम करना चाहता हूँ लेकिन मैं वह काम करना चाहता हूँ जिसकी खपत अधिक हो और खर्च कम हो, प्रतिदिन प्रयोग में आने वाली वस्तु हो। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि क्या करुँ, मित्र कुछ देर तक बैठा रहा, बातें हुई और चला गया। ज़िलेट पूरे दिन यही सोचता रहा कि क्या करूँ? दूसरे दिन सुबह 'ज़िलेट' शेविंग करने के लिए खड़ा था उसने देखा कि उसका उस्तरा ठूँठा है, ज़िलेट ने उसे पत्थर पर घिसा और फिर शेव करने लगा। ज़िलेट बार-बार अपने उस्तरे को पत्थर पर घिसकर तेज कर रहा था मगर उस्तरा काफी पुराना था इसलिए वैसी धार नहीं बन पा रही थी जैसी कि नये की होती है। बस, उसी दिन शेविंग करते हुए ज़िलेट के मन में यह विचार आया कि मुझे शेविंग करने के लिए ब्लेड बनाना चाहिए। यह बेहद उपयोगी सिद्ध होगा, कई दिनों तक ज़िलेट के मन में हजारों बार यही विचार होता रहा कि प्रतिदिन के प्रयोग में आने वाला ब्लेड लोगों के लिए बेहद उपयोगी सिद्ध होगा। धन का अभाव था, किसी भी प्रकार साधन जुटाने की हिम्मत नहीं थी, इसका निर्माण किस प्रकार किया जाए, इसकी तैयारी किस प्रकार की जाए? कुछ दिनों के बाद ज़िलेट अपने मित्र के पास गया-मित्र ने ज़िलेट को देखा तो खुश हुआ आज ज़िलेट उदास नहीं था बल्कि खुश था, उत्साहित था और वह अपने मित्र को जल्दी से अपनी 'ब्लेड' बनाने की योजना बताने के लिए उतावला दिखाई दे रहा था। ज़िलेट ने जल्दी से अपनी बात मित्र से कह दी। मित्र को ज़िलेट बी बात बहुत पसन्त आई और आर्थिक सहयोग देने की बात भी स्वीकार कर ली। ज़िलेट ने ब्लेड बनाने के काम में दिन रात परिश्रम किया, लगभग एक वर्ष तक ज़िलेट ने भरपूर प्रयत्न किया मशीन खरीदी, जगह तलाशी एवं एक साथी भी। दिन रात प्रयत्न किया और परिणाम स्वरूप ब्लेड बनकर तैयार हो गया। परीक्षण भी सफल हुआ। अब बाजार में बेचने का समय आया। ज़िलेट स्वयं अपने साथी को लेकर दुकानों पर गया और लोगों को समझाया लेकिन यह कहानी किसी की समझ नहीं आई, ज़िलेट तीन दिन तक एक भी ब्लेड नहीं बेच पाया। चौथे दिन एक व्यक्ति को खूब समझाया, उसे डेमो भी दिया, उसे मन-मारकर एक ब्लेड खरीदा। ज़िलेट बिना थके हर रोज अपने साथी के साथ ब्लेड बेचने निकलता, मगर शाम को प्राय: उदास लौटा करता। ज़िलेट ने हिम्मत नहीं हारी। लगभग तीन मास बाद ज़िलेट अपने पुराने ग्राहक के पास गया तो इस बार उसे कुछ भी समझाना नहीं पड़ा और उसने अपने मित्र को भी ब्लेड खरीदने को कहा। इस प्रकार एक वर्ष में केवल 51 ब्लेड ही बिके। क्योंकि लोगों को यकीन ही नहीं हो रहा था कि इस तरह ब्लेड से शेविंग की जा सकती है उस समय की पब्लिक तो शेविंग करने का साधन उस्तरे को ही उत्तम समझती थी इसी कारण ब्लेड बेचने की प्रक्रिया, ब्लेड बनाने से भी अधिक कठिन सिद्ध हुई। लोगों ने इस ब्लेड की और देखना भी पसन्द नहीं किया लोगों के मुँह से बस एक ही बात निकलती थी कि इतनी तेज धार वाले ब्लेड से मुँह कट जाने का भय है, ज़िलेट लोगों को डेमो देने के लिए भीड़ वाली जगह पर शेविंग करके दिखाया करता, मगर भीड़ को समझाना टेढ़ी खीर ही साबित हुई, बड़ी मुश्किल से कोई एक आदमी तैयार होता, कभी दो आदमी तैयार हो जाते।

ज़िलेट ने हिम्मत नहीं हारी और उसने अपनी पूरी ताकत ब्लेड बेचने में लगा दी परिणाम स्वरूप एक वर्ष में ज़िलेट ने इतने ब्लेड बेचे कि फायदा तो दूर की बात है खर्चा भी नहीं निकला।

प्रतिदिन के प्रयोग में आने वाली वस्तु थी, पहले से प्रयुक्त लोगों ने इसकी माँग शुरु कर दी और इसके बाद बड़ी तेजी से ब्लेड का कारोबार शुरु हुआ-हिन्दी भाषा में कहावत है- ''माली सींचे सौ घड़ा तब ऋतु पे फल होय'' अर्थात् माली सैकड़ों घड़े पानी की सिंचाई करने के बाद ही समय आने पर फलों का हकदार होता है वैसी ही परीक्षा ज़िलेट की भी हुई-मगर ज़िलेट की हिम्मत ने उसे आज इस मंजिल पर पहुंचा दिया है कि दुनिया भर में घर-घर में प्रयोग किया जाने वाला ब्लेड बेहद उपयोगी वस्तु है। आज ब्लेड की दुनिया का कारोबार लगभग 12 करोड़ से अधिक का है।

इससे यह बात तो सिद्ध है कि परिश्रम का कोई विकल्प नहीं है, हम समाज में देखते हैं कि लोग थक हारकर बैठ जाते हैं, हिम्मत हार कर बैठ जाते हैं मैं उनसे कहना चाहूंगा कि उन्हें हिम्मत हार कर बैठने से कुछ भी मिलने वाला नहीं है बल्कि नई सुबह के साथ नई शुरुआत करने का मन तैयार करना चाहिए। हर सुबह हमारे लिए एक नया सन्देश लेकर आती है-हमें कुछ करने के लिए प्रेरित करती है बस, हमें आवश्यकता है उसे पहचानने की, न कि थक हारकर बैठने की। समाज में महान् पुरुषों के जीवन से शिक्षा लें जिन्हें हम आज महापुरुष मानते हैं उनके जीवन को देखें-यूँ लगता है कि ''जीवन में कष्टों को देखकर न घबराने वाले पुरुष ही महापुरुषों की श्रेणी में आते हैं'' शायद इसीलिए इनका जीवन आदर्श जीवन कहा जाता है-हमें भी अपने आदर्शों को स्थापित करना चाहिए एवं नई चेतना पाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। महापुरुषों के जीवन को देख नई ऊर्जा का सृजन अनुभव कर जीवन को सफल बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। - साभार 'नये आकाश की तलाश'

हिन्दी संगोष्ठी आयोजित

बरेली नगर के ऐतिहासिक बिहारीपुर आर्यसमाज द्वारा बरेली कॉलेज में 'हिन्दी की दशा एवं दिशा' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। मॉरिशस के वरिष्ठतम इतिहासकार-साहित्यकार प्रह्लाद रामशरण ने अपने भाषण में फ्रेंच और अन्य भाषाओं के वर्चस्व वाले मॉरिशस में भारतवंशियों द्वारा हिन्दी और भोजपुरी भाषाओं को स्थापित करने के लिए किये गए संघर्षों पर प्रकाश डाला। उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. महावीर अग्रवाल ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में कहा कि हिन्दी हमें हमारी जड़ों से जोड़ती है। राजा रणंजय सिंह महाविद्यालय (अमेठी) के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. ज्वलंत कुमार शास्त्री ने कहा कि स्वामी दयानन्द तथा आर्यसमाज ने विभिन्न प्रांतों के लोगों को हिन्दी से जोड़कर राष्ट्रीय एकता की नींव को मजबूत किया था। द्रोणस्थली आर्ष कन्या गुरुकुल (देहरादून) की आचार्या डॉ. अन्नपूर्णा ने सम्पूर्ण राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने की हिन्दी की क्षमताओं पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रो. महावीर अग्रवाल को आर्य वेद रत्न सम्मान से, प्रो. ज्वलंत कुमार शास्त्री को (आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र स्मृति विद्वत रत्न सम्मान से), डॉ. अन्नपूर्णा आचार्या को (वेदभारती डॉ. सावित्री देवी शर्मा स्मृति सम्मान से) डॉ. राम प्रकाश शर्मा को (वैदिक वांग्मय व साहित्य के युवा सम्राट डॉ. संतोष कण्व स्मृति आर्यकवि रत्न सम्मान से) तथा श्री गोपालाचार्य जी को (महात्मा गोपाल सरस्वती हिन्दी काव्य रत्न सम्मान से) सम्मानित किया गया।

प्रवेश प्रारम्भ

<u>आत्मशुद्धि आश्रम ट्रस्ट बहादुरगढ़</u> द्वारा संचालित (गुरुकुल) अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड़ फरुखनगर गुड़गांव हरियाणा में स्वच्छ वातावरण से ओत प्रोत आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित गुरूकुल प्रारम्भ हो चुका है जिसमें छात्रों को वैदिक शिक्षा व संस्कार के साथ साथ आधुनिक विषयों की शिक्षा भी दी जायेगी। इच्छुक विद्यार्थी शीघ्र सम्पर्क करें।

आवश्यकता- (1) एक सेवा निवृत्त मुख्य अध्यापक जो गुरूकुल में छात्रों की सेवा करना चाहते हैं। भोजन आवास गुरूकुल में ही रहेगा। (2) एक अनुभवी कुशल वार्डनर (संरक्षक) की छात्रों के लिए आवश्यकता है जो छात्रों को सुबह 4.30 बजे से जगाकर रात्रि 9.00 बजे तक पूरी तरह दिनचर्या चला सके। (3) एक रसोईया जो छात्रों के लिए भोजन तैयार कर सके। भोजन, आवास, और उचित वेतन दिया जायेगा।

सम्पर्क करे:- अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड़ फरुखनगर गुड़गांव हरियाणा मुख्याधिष्ठाता- स्वामी धर्ममुनि 9416054195 आचार्य- राजहंस मैत्रेय 9813754084, संरक्षक- वान. ईशमुनि 9991251275, 9812640989, विशेष सहयोगी- महात्मा विश्वमुनि 9416885535, व्यवस्थापक- विक्रमदेव शास्त्री 9896578062

(पृष्ठ 7 का शेष)

कहा कि आप मुझे योग तथा आध्यात्मिक साधना का उपदेश दें। उन्होंने उसे कहा कि अमुक दिन प्रात: काल चार बजे निवास स्थान पर आना। निर्दिष्ट व्यक्ति उनके पास पहुंचा। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में निर्दिष्ट प्राणायाम विधि को करके दिखाया और कहा कि हठ योगादि मैंने बहुत कुछ किया परन्तु पातंजल राज योग द्वारा मन को जो शांति मिलती है वह किसी से नहीं मिलती। यम नियम आदि अष्टांग योग ही उपासना का परमात्मा-आत्मा के योग अर्थात् एक दूसरे के समीप होने का उत्तम अचूक साधन है परन्तु यह साधन निरन्तर दीर्घकाल तक श्रद्धा पूर्वक करना चाहिए और संध्या भी प्रात: काल सूर्यादय से पहले 3 बजे के बाद करनी चाहिए। एक जिज्ञासु ने उनसे पूछा कि जब तक परमात्मा का साक्षात्कार नहीं होता तब तक बिना अनुभव किये दूसरों के कहने के आधार पर उसके गुणों का वर्णन करना या उसकी उपासना करनी कहां तक ठीक हैं। इससे मनुष्य में Hypocracy ढोंग करने की भावना पैदा होती है। स्वामी जी ने कहा-यदि तुम्हारे हृदय में इस प्रकार की जिज्ञासा की भावना जगी रहेगी तो परमात्मा स्वयं इसका समाधन करेंगे, तुम इस भावना के साथ उसके गुणों का चिन्तन करते रहो।

एक बार लाहौर में एक व्यक्ति ने श्री रविन्द्रनाथ ठाकुर जी से पूछा कि परमात्मा के दर्शन कैसे हो सकते हैं-उन्होंने उत्तर दिया कि हमें प्राकृतिक दृश्य मूर्त वस्तुओं के साथ ज्यादा सम्पर्क होने से हमारे प्रश्न करने का ढंग भी प्राकृतिक तथा मूर्त हो गया है, परन्तु यदि हम आध्यात्मिक भावना से ही इस पर सोचें और प्रश्नोत्तर करने की अपेक्षा मनन ध्यान करें तो स्वानुभव ही इसका उत्तर है।

(पृष्ठ 14 का शेष)

उन्होंने ईश्वर को सर्वशक्तिमान एक सत्ता माना वह सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान सर्वेश्वर अनादि अनुपम सर्वाधार सर्वान्तर्यामी सच्चिदानन्द स्वरूप सृष्टि को रचने वाला है उसकी कोई मूर्ति नहीं वह अजन्मा अमर व अजर है। अत: मूर्ति पूजा नहीं करनी चाहिए, मूर्ति पूजा का ऋषि दयानन्द बल पूर्वक विरोध करते थे।

ऋषि ने विश्व की शान्ति हेतु सभी मत मतान्तरवादियों को अपने अपने मत से अमानवीय व परस्पर विरोधी वातो को निकालने को कहा उनका विचार था कि विश्व के लोग परस्पर सुख व शान्ति से रहें कहीं कोई वैमनस्य ईर्ष्या देष आदि न हो। महर्षि दयानन्द ने अपना सम्पूर्ण जीवन भारत के नवनिर्माण हेतु अर्पित कर दिया। हमें उनके लिए ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, गोकरूणा निधि, स्वमन्तव्य प्रकाश, अष्टाध्यायी, वेद भाष्य व अन्य ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए।

- गली न. 2, चन्द्र लोक कॉलोनी, खुर्जा-203131

चुनाव समाचार

आर्य समाज रामनगर, गुड़गांव, हरियाणा

प्रधान- श्री ओम प्रकाश चुटानी **मन्त्री**- श्री राधा कृष्ण सोलंकी

कोषाध्यक्ष- श्री भगवान दास मनचन्दा

आर्य समाज मयूर विहार, फेज-2, दिल्ली

प्रधान- श्री चरनजीत लाल मोहन **मन्त्री**- श्री ओम प्रकाश पाण्डे

कोषाध्यक्ष- श्री लक्ष्मी चन्द गुप्ता

आर्य समाज 115 पिछोली, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर, राजस्थान

प्रधान- श्री सुरेश चन्द्र चौहान **मन्त्री**- श्री कैलाश मौर्य

कोषाध्यक्ष- श्री यशवंत श्रीमाली

आर्य समाज रामनगर, रूड़की, उत्तराखण्ड

प्रधान- श्रीमती उषा रानी **मन्त्री**- श्री रामेश्वर प्रसाद सैनी

कोषाध्यक्ष- श्री जे.डी. त्यागी

आर्यसमाज की आन और शान के प्रतीक

पद्मश्री स्व. वीरेश प्रताप चौधरी

बहुमुखी प्रतिभा के धनी, समाजसेवा की अनूठी मिसाल, 75 वर्ष के समर्पित जीवन सहित गाँधीवादी वीरेश प्रताप चौधरी अब एक दृष्टान्त बन गए हैं। निष्ठा, लगन, समर्पण और सतत् परिश्रम से संगठनकर्त्ता, अभियान कर्त्ता और रचनात्मक प्रवृत्तियों के संचालक के रूप में नाम लेते ही सतत् क्रियाशील, सदा प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति की तस्वीर सामने आ जाती है।

राजनीति को नीति का परिवर्तन और अनीति का निवारण का माध्यम बनाने वाले वीरेश जी, धर्म और समाज जिस क्षेत्र में भी गए अपने योगदान की अमिट छाप छोड़ी जिसकी सुगन्ध देश देशान्तर तक फैलने लगी।

कौन कहेगा कि वीरेश जी नहीं रहे। वह उन लक्षाधिक लोगों के अन्तःकरण में बसे हैं जिनके जीवन को उन्होंने निकट से प्रभावित किया। असहाय को उबारने की करूणा और अन्याय से अकेले टक्कर लेने का साहस उनमें था। वकालत के पेशे में उनकी लेखनी और वाणी प्रामाणिक मानी गई।

नई पीढ़ी को वीरेश जी का एक ही सन्देश है, **''हिम्मत मत हारो। युग की चुनौती स्वीकार करो। चलते रहो, ईश्वर सफलता देंगे।''**

जीवन वृत्तः जन्म 31 मई, 1938 को स्वतन्त्रता सेनानी देसराज चौधरी और श्रीमती चन्द्रवती चौधरी, समर्पित समाजसेवी के परिवार में जन्म। जन्म स्थान चूड़ी वालान, पुरानी दिल्ली। आरम्भिक शिक्षा एंग्लो संस्कृत स्कूल, दरियागंज, दिल्ली में।

जीवन के जिस भी क्षेत्र में कदम रखा, वक्ता, अधिवक्ता और संगठनकर्ता के रूप में विलक्षण प्रतिभा का परिचय दिया।

छात्र जीवनः दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष (1960-61)। दिल्ली विश्वविद्यालय से एम.ए. और एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

विवाहः 24 फरवरी, 1969 को अमरोहा, उ.प्र. के प्रतिष्ठित दानवीर साहू जगदीश सरन जी के परिवार में जमींदार साहू बृजपाल सरन व श्रीमती राजरानी की सुपुत्री श्रीबाला से विवाह, जो संगीत विशारद, एम.ए., राजनीति विज्ञान व बी.एड. तक शिखा प्राप्त हैं।

श्रीबाला जी ने हर विपदा में चट्टान की तरह पति को शक्ति प्रदान की और जिन्दगी की धूप-छाया में उनका साथ दिया।

व्यवसायः 1962 में आजीविका के लिए वकालत का पेशा अपनाया। 1965 में उच्चतम न्यायालय की 'एडवोकेट ऑन रिकार्ड' परीक्षा उत्तीर्ण। 1972 से 1983 तक दिल्ली विश्वविद्यालय के स्थायी वकील। फरवरी, 1990 में दिल्ली उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता बने। दिल्ली, मुम्बई और इलाहाबाद उच्च न्यायालय तथा उच्चतम न्यायालय के फैसलों पर आपकी प्रतिभा की छाप अंकित है। एक मामले में चार राज्यों के ऐतिहासिक पर्यटक स्थलों पर जाने वाली 'इंडियन ओडेसी' ट्रेन मुम्बई उच्च न्यायालय में सरकार से टक्कर लेकर शुरु करवायी।

समाजसेवा और शिक्षा- 1963 और 1972, पुनः 1984 और 1994 में दिल्ली विश्वविद्यालय कोर्ट के सदस्य निर्वाचित। 1964 से 1970 तक 'दिल्ली विश्वविद्यालय कार्यकारी परिषद्' के निर्वाचित सदस्य। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा 1918 में स्थापित 'आर्य अनाथालय' के उत्कर्ष की वर्तमान स्थिति तक पहुंचाने का श्रेय स्वर्गीय देसराज चौधरी और उनके सहयोगियों के बाद वीरेश जी की एकनिष्ठ साधना को है।

जिन्दगी हर हाल में ढलती है,
जैसे रेत मुट्ठी से फिसलती है,
गिले शिकवे कितने भी हों,
हर हाल में हंसते रहना क्योंकि...
जिन्दगी ठोकरों से ही संभलती है।

टंकारा समाचार जूलाई, 2014
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2012-13-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2012-14
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-7-2014
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथिः 23.06.2014

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइलः 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय